अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

हमारी प्रतिज्ञा

हमारी देह तब तक इसी तरह इस काम में निरंतर लगी रहेगी, जब तक स्वराज्य का रूपांतर ग्रामराज्य में नहीं होगा। —विनोबा

वर्ष-३, अंक-३२ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १० मई, '५७
सौर वैशाख २०, शके १८७९ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार
वार्षिक मूल्य ६) एक प्रति का २ आना

उत्तर प्रदेश में बाबा राघवदासजी की पद यात्रा

दिनांक १३ अप्रैल १९५५ से २६ अप्रैल १९५७ तक

पदयात्रा की फलश्रुति

जिला-संख्या	पड़ाव-संख्या	यात्रा-मील	दाता-संख्या
५१	७४८	६७०१	९५८८

प्राप्त भूमि	साधनदान-नकद	संपत्तिदान वार्षिक	'भूदान'-ग्राहक
४३१९० एकड़	४६३४५)	३६८०६)	२१३

'गीता-प्रवचन'-बिक्री	साहित्य-बिक्री
४२५६	४१५३७)

समग्र ग्रामदान ६

१६६० गाँवों में सभाएँ हुईं, अन्य दान : १५२) अनाज, ३६ बैल, १३१३ पेड़, २६ कुएँ, १५ मकान, १८५ हल, हंसियाँ, फावड़े, कुदाल, जेवर आदि।

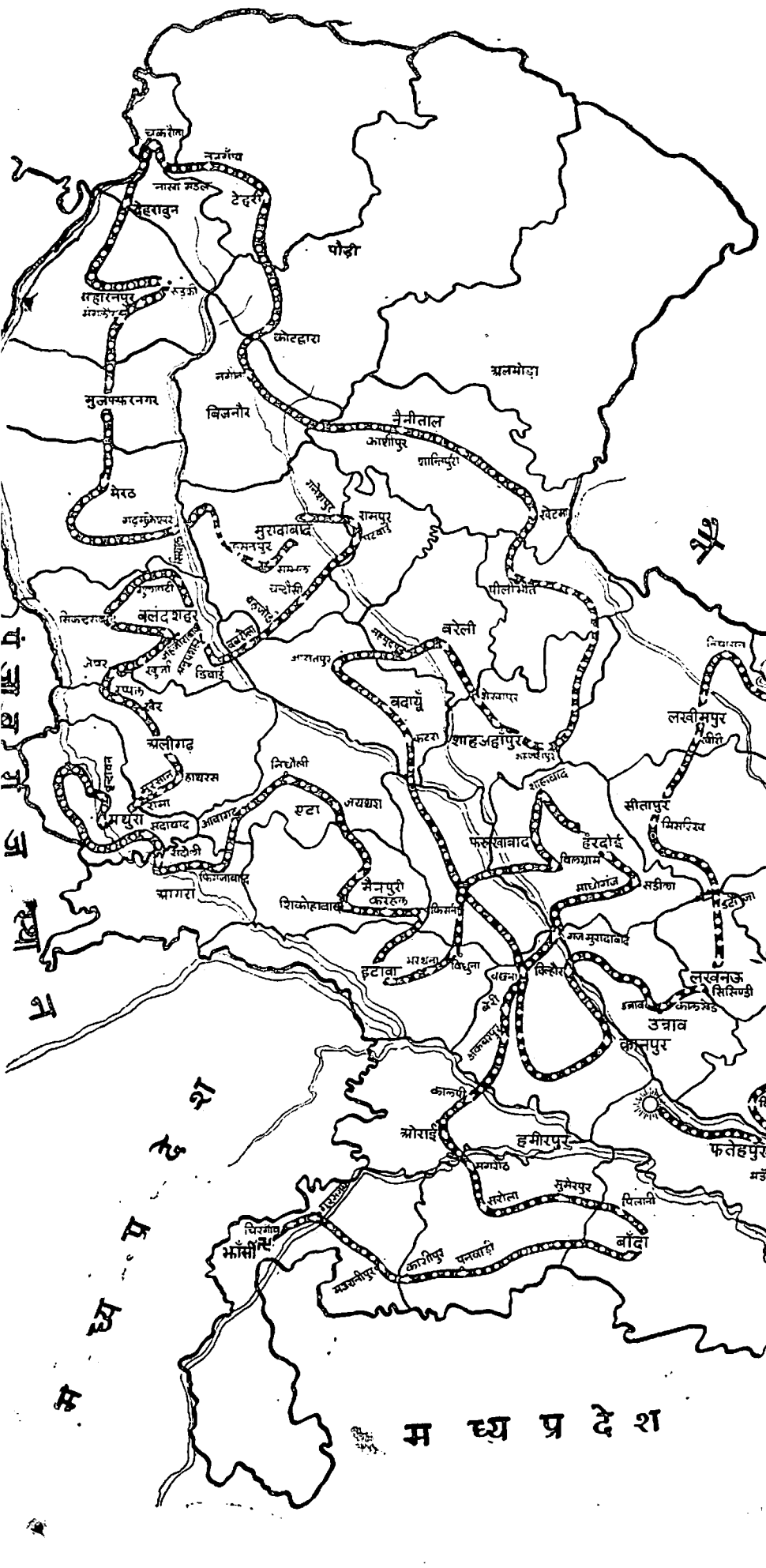

www.vinoba.in

समाज और भूमि-व्यवस्था : २.

(टॉलस्टाय)

इस प्रकार जमीन बाँटना और भी अधिक भयंकर इसलिए होगा कि जो काम करना नहीं चाहते या जो बहुत ज्यादा गरीब हैं, वे रुपया लेकर अपनी जमीन धनी लोगों के हवाले कर देंगे और फिर बड़े-बड़े जमींदारों की संख्या बढ़ जायगी। इसलिए यहाँ के निवासी यह तय करते हैं कि जमीन को उन्हीं लोगों के हाथ में छोड़ दिया जाय, जिनके कब्जे में वह है और यह तय कर लिया जाय कि इस जमीन के बदले जमीन के मालिक सार्वजनिक कोष में एक निश्चित रकम दे दिया करें, जो उनके कब्जे की जमीन से उस पर कब्जा करने वाले को होती। पर यह रकम उस मेहनत से नहीं तय की जाय; जो कि उस जमीन पर की गयी है, बल्कि उस जमीन की किस्म और स्थिति से वह रकम आँकी जाय और अंत में इस स्थान के निवासी इस रकम को आपस में बराबर बाँट लेने का निश्चय करते हैं। लेकिन जिन लोगों के कब्जे में जमीन है, उनसे रुपये वसूल करना और प्रत्येक मनुष्य को बराबर बाँटना भी एक बहुत जटिल समस्या है। इसके अतिरिक्त सभी निवासियों को पाठशाला, प्रार्थना, आग बुझाने के इंजन, गोशालाएँ, सड़कों आदि की मरम्मत कराने की सार्वजनिक आवश्यकताओं आदि के लिए हमेशा रुपया काफी नहीं होता। इसलिए इस स्थान के निवासी जमींदारों से जमीन की आमदनी का रुपया इकट्ठा करने, उसे सब लोगों में बाँट देने और फिर टैक्स के लिए उसे वसूल करने के बदले यह निश्चय करते हैं कि जमीन से होने वाली सारी आमदनी तहसील वसूल कर ले और उसे सार्वजनिक आवश्यकताओं में खर्च करे।

इस निर्णय पर पहुँचने के पश्चात् वे निवासी जमींदारों से उनके कब्जे की जमीन के हिसाब से रुपया तलब करते हैं, जिन किसानों के पास थोड़ी-थोड़ी जमीन है, उनसे भी रुपया तलब करते हैं। परंतु उन थोड़े से आदमियों से कोई भी रकम तलब नहीं की जाती, जिनके पास कुछ भी जमीन नहीं हैं, किन्तु जमीन से होने वाली आमदनी से जो भी समस्याएँ तैयार की गयी हैं, उनका उपयोग बिना कुछ दिये मुफ्त में करने की उन्हें इजाजत भी दे दी जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि जो जमींदार अपनी जमीन पर नहीं रहता है और उससे बहुत कम पैदा करता है, उसको इस प्रकार टैक्स देते हुए जमीन पर अपना कब्जा बनाये रखने से कोई लाभ नहीं दिखाई पड़ता और इसलिए वह उसे छोड़ देता है। पर वह दूसरा जमींदार, जो एक अच्छा किसान है, अपनी जमीन के सिर्फ एक हिस्से को ही छोड़ता है और अपने लिए इतनी जमीन बनाये रखता है, जिससे कि वह उतने रुपये से ज्यादा पैदा कर सके, जो कि ऐसी जमीन का इस्तेमाल करने के लिए माँगा जाता है। जिन किसानों के पास जमीन थोड़ी है, जिनके पास काम करने वाले ज्यादा और जमीन कम है तथा जिनके पास जमीन बिलकुल नहीं है, पर जो अपनी जीविका का उपार्जन जमीन पर परिश्रम करके करना चाहते हैं, वे जमींदारों द्वारा छोड़ी गयी इस जमीन को अपने कब्जे में ले लेते हैं। इस तरह उस स्थान के सभी निवासियों के लिए जमीन पर रहना और उससे अपनी जीविका का उपार्जन करना संभव हो जाता है, और कुल जमीन उन लोगों के हाथ में चली जाती है या उनके कब्जे में बनी रहती है, जो उस पर काम करना चाहते हैं और जिनमें अधिकाधिक उत्पादन करने की सामर्थ्य है। साथ ही उस स्थान की सार्वजनिक संस्थाओं में भी उन्नति होती जाती है, क्योंकि इस योजना द्वारा सार्वजनिक कामों के लिए पहले की अपेक्षा अधिक रुपया मिलता है। इन सबके अलावा जमीन के संबंध में यह सारा परिवर्तन बिना किसी लड़ाई-झगड़े या रक्तपात के ही हो जायगा, क्योंकि जिन लोगों को खेती करने से कोई लाभ नहीं है, वे अपनी इच्छा से ही जमीन को छोड़ देंगे। यही हेनरी जार्ज की योजना है, जो भिन्न-भिन्न राज्यों तथा सारे मानव-समाज के लिए भी अनुकूल सिद्ध हो सकती है।

अब मैं संक्षेप में अपनी बातों को फिर दुहरा देना चाहता हूँ।

श्रम-जीवियो! मैं तुम्हें पहली सलाह देता हूँ कि तुम पहले यह समझ लो कि तुम्हें आवश्यकता किस बात की है। व्यर्थ उस वस्तु के प्राप्त करने का कष्ट न उठाओ, जिसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है। तुम्हें आवश्यकता सिर्फ जमीन की है, जिस पर कि तुम रह सको और जिससे तुम अपना भरण-पोषण कर सको।

दूसरे, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि इस बात पर तुम लोग अच्छी तरह विचार कर लो कि किन उपायों से तुम उस जमीन को प्राप्त कर सकते हो। इसे तुम रक्तपात करके नहीं प्राप्त कर सकते। ईश्वर तुम्हें ऐसी बेवकूफी से बचाये। भय-प्रदर्शन, हड़ताल अथवा पार्लियामेंट में अपने प्रतिनिधि भेज कर भी यह काम नहीं हो सकेगा। इसका सरल उपाय है, उन कार्यों में भाग लेने से इनकार कर देना, जिन्हें तुम बुरा समझते हो, अर्थात् यह कि तुम्हें सरकारी सेना के सैनिक बन कर और रक्तपात करके अथवा जमींदारों को जमीन पर काम करके या उनको लगान पर लेकर जमीन को वैयक्तिक संपत्ति बनाने वाले अनौचित्य का समर्थन नहीं करना चाहिए।

तीसरे, यह तो सोचो कि जिस समय जमीन जमींदारों के चंगुल से निकल कर स्वतंत्र सार्वजनिक संपत्ति बन जायगी, उस समय तुम उसका बँटवारा किस प्रकार करोगे? तुम्हें यह नहीं समझना चाहिए कि जो जमीन जमींदार छोड़ देंगे, वह तुम्हारी संपत्ति होगी, किन्तु तुम्हें यह समझना चाहिए कि जमीन का बँटवारा न्यायोचित और बिना किसी पक्षपात अथवा द्वेष-भाव के सब लोगों में समान रूप से होना जरूरी है और इसलिए यह आवश्यक है कि भौमिक संपत्ति पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार न माना जाय, चाहे वह जमीन एक ही गज क्यों न हो। सूर्य की गर्मी और वायु के समान जमीन को सब मनुष्यों की सम्मिलित संपत्ति मान कर ही, तुम बिना किसीको हानि पहुँचाये, न्यायपूर्वक किसी भी नवीन या पुरानी योजना के अनुसार, जिसे तुम सब लोग मिल कर सोचो और पसंद करो, जमीन को सब मनुष्यों में बाँट सकोगे।

मैं यह सलाह दूँगा कि जिस वस्तु की तुम्हें आवश्यकता है, उसके प्राप्त करने के लिए शासकों के साथ कोई लड़ाई-झगड़ा या रक्तपात करने अथवा साम्यवादियों के निर्दिष्ट मार्ग पर चलने की आवश्यकता नहीं है। सबसे पहले स्वयं अपना जीवन उत्तम और सदाचारपूर्ण बनाने की जरूरत है। लोगों का जीवन इसलिए खराब हो रहा है कि वे बुरा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। यह खयाल मनुष्य-जाति को हानि पहुँचा रहा है कि उनकी दुरवस्था का कारण उनके भीतर नहीं, बल्कि बेहद बाह्य संसार में है। यदि कोई मनुष्य अथवा मनुष्य-समाज यह समझता है कि जिन बुराइयों को वह अनुभव कर रहा है, उनका मूल्य बाह्य जगत् में है और फिर इसके अनुसार इन बाहरी बातों के सुधार और परिवर्तन में लग जाता है, तो उसकी बुराइयाँ और भी बढ़ती चली जायँगी और उसकी दशा और भी बिगड़ती चली जायेंगी। लेकिन अगर कोई मनुष्य अथवा मनुष्य-समाज वास्तव में इन कारणों का शीघ्र पता लगाना चाहता है और यह चाहता है कि वे अपने आप नष्ट हो जायँ, तो उसके लिए केवल इतना ही पर्याप्त है कि वह सच्चे हृदय से अपने ऊपर विचार करना आरंभ कर दे और जिन बुराइयों का वह मनुष्य अथवा मनुष्य-समाज शिकार हो रहा है, उनके मूल कारणों को अपने अंदर ही खोजे।

"पहले तू ईश्वर के साम्राज्य और सत्य की खोज कर, बाकी बातें तुझे अपने आप प्राप्त हो जायेंगी," यह मानव-जीवन का मूल नियम है। ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध सदाचारविहीन जीवन व्यतीत करने से तुम्हारे हजारों प्रयत्न करने पर भी तुम्हें अभीष्ट सुख और शांति नहीं मिल सकेगी। इसके विपरीत सुख और शांति की परवाह न करो, केवल ईश्वर की आज्ञा के अनुसार न्यायानुकूल और सदाचारमय जीवन व्यतीत करते रहो। अपने आप तुम्हें वह सब सुख प्राप्त हो जायगा और सो भी इस तरह कि जिसका कभी खयाल भी नहीं किया हो। यह बात बिलकुल स्वाभाविक है कि जिस दरवाजे के पीछे हमारी अभीष्ट वस्तु रखी हुई है, उसके पार पहुँचने का हम प्रयत्न करें, विशेषकर उस समय, जब कि हमारे पीछे आदमियों की भीड़ खड़ी हुई हो और हमें धक्का देकर मानों पीस कर आगे की ओर बढ़ने के लिए हमें वह मजबूर कर रही हो। तथापि इस तरह जितना ही अधिक हम उस दरवाजे के बाहर निकल भागने का प्रयत्न करते हैं, उतनी ही कम आशा हमारे उस पार पहुँचने की होती जाती है, क्योंकि वह दरवाजा हमारी ही ओर खुलता है।

इसलिए सुख और शांति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपनी बाह्य परिस्थिति का सुधार करने की नहीं, बल्कि स्वयं अपना, अपने अन्तःकरण का सुधार करने की आवश्यकता है। उसे चाहिए कि वह बुरे कामों को करना छोड़ दे और अच्छे कामों का करना आरंभ कर दे। सुख और शांति के मार्ग में लगे हुए द्वार हमेशा उस मनुष्य की ओर ही खुला करते हैं, जो उनके पार पहुँचने के लिए उन्हें खोलने का प्रयत्न करता है। यदि तुम समझते हो कि सच्चा सुख और शांति प्राप्त करने के लिए तुम्हें ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार प्राणीमात्र के साथ भातृभाव से रहना चाहिए, तो तुम्हें भी दूसरों के साथ वही करना चाहिए, जो तुम चाहते हो। दूसरे लोग तुम्हारे साथ वैसा ही करें, यह सिद्धांत जितना ही अधिक तुम समझोगे और समझ कर उसे कार्य-रूप में लाने का प्रयत्न करोगे, उतना ही अधिक तुम्हें वह शांति भी प्राप्त होगी—जिसके पाने के लिए तुम इच्छुक हो और जिससे कि तुम्हारे इस दास्य-जीवन (गुलामी) का अंत हो सकेगा।

अन्त में मैं तुम्हें यही कहूँगा, "सत्य को पहचानो, वही तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

('सामाजिक कुरीतियाँ' से) प्रेषक—गोविंद रेड्डी

---

www.vinoba.in

तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति के गर्भितार्थ

(धीरेंद्र मजूमदार)

मेरे पास कोई नयी बात कहने को नहीं है। हमेशा से जो कहता आ रहा हूँ, वही एक बात आप लोगों से दुहरानी है। मैं चाहता हूँ कि हम सब मजदूर बनें। आप कहते होंगे कि यह कैसा आदमी है! यह तो एक ही बात बार-बार दुहराता है! इससे मतलब क्या? साथियो, मैं कोई शास्त्री नहीं हूँ। मैं केवल एक मिस्त्री हूँ। मिस्त्री एक रद्दा लगा कर तब तक दूसरा रद्दा नहीं रखता है, जब तक पहला रद्दा सूख न जाय और उसे वह ठोंक-ठोंक कर कड़ा न बना ले तथा उसे काट-छाँट कर सीधा न कर ले।

पिछले तीस साल से मेरे साथी मुझे हमेशा पागल कहते रहे हैं! पागल उसे कहते हैं, जो सब लोग जो बात कहते रहते हैं, उससे भिन्न कुछ कहता रहता है। मैं हमेशा पागलपन की बात करता हूँ और आप मेरी बात सुनते हैं। आप भी क्या करें? आपने तो मुझसे भी एक बड़े पागल को अपना नेता बना रखा है। उसने तो ऐसी बात कह डाली, जो इतिहास में कही नहीं गयी थी। उसने इतना बड़ा आन्दोलन चलाने के लिए तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति की बात की। क्या आपने सुना है कि इतिहास से कभी किसी क्रांतिकारी नेता ने अपने आन्दोलन के दौरान में ही आपने संगठन को विघटित किया है?

"तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति क्यों और क्या", इसे साफ-साफ समझ लेने की आवश्यकता है। जब तक हम सब इसकी आवश्यकता तथा स्वरूप के बारे में स्पष्ट न हो लें, तब तक इस आन्दोलन में वेग नहीं आ सकता है। हर चीज का एक स्वभाव और स्वधर्म होता है। स्वधर्म-निष्ठा से सिद्धि-लाभ होता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू हवाई जहाज पर चढ कर सिगरेट फूंकते हुए भी लाखों भीड़ का जयजयकार पा लेंगे, परन्तु विनोबाजी के हाथ में एक बीड़ी देख कर जनता उनसे नफरत करने लगेगी। जवाहरलालजी अगर विनोबाजी की नकल करेंगे, तो उनको सिद्धि नहीं मिलेगी और विनोबाजी जवाहरलालजी की नकल करके आगे नहीं बढ़ सकेंगे। स्वधर्म-निष्ठ होने के कारण दोनों ही महान् हैं।

अपना-अपना स्वधर्म

उसी तरह आजादी-आन्दोलन के स्वधर्म और स्वभाव के अनुसार आज की भूदान-क्रांति नहीं चल सकती और न वह आंदोलन जनकल्याण-कार्य के स्वधर्म और स्वभाव के अनुसार ही चल सकता है। उसे तो अपने ही स्वधर्म के अनुसार चलना होगा।

वस्तुतः गांधीजी ने दुनिया को कोई नये लक्ष्य का संदेश नहीं दिया है। उन्होंने जो नयी बात कही, वह यह कि साध्य और साधन में समता हो। क्रांति की प्रक्रिया में यही उनकी सबसे बड़ी देन है। साधन और साध्य की एकरूपता नहीं हुई, तो गांधीजी की दृष्टि में वह सिद्धि का भास भले ही हो जाय; परन्तु वास्तविक सिद्धि का लाभ नहीं हो सकता। अतएव सबसे पहले हमें अपने साध्य को अच्छी तरह समझ लेना होगा।

आज केवल विनोबा ही नहीं, हम-आप सभी सर्वोदय-सेवक कहते हैं कि हमें शासनमुक्त, शोषणहीन और श्रेणिहीन समाज कायम करना है। हम कहते हैं कि कांचन-मुक्ति के सिवा शासन-मुक्ति नहीं हो सकती। वस्तुतः शासन-मुक्त समाज याने कोई उच्छृंखल या अव्यवस्थित समाज हम नहीं मानते हैं। शासन-मुक्त समाज भी सम्पूर्ण रूप से व्यवस्थित समाज ही होगा। निस्संदेह ऐसा समाज 'संचालित' न होकर 'सहकारी' होगा। ऐसा तभी संभव होगा, जब समाज के मूल कर्मी यानी उत्पादक स्वावलम्बी हो सकें, क्योंकि उनके स्वावलम्बन के बिना समाज में एक 'व्यवस्थापक-वर्ग' की आवश्यकता रह ही जायगी, जिसकी परिणति से शासन संचालित ही होता जायगा।

नेतृत्व-स्वावलंबन और व्यवस्था-स्वावलंबन

यहाँ 'स्वावलम्बन' से मतलब, जैसा कि हम सब समझते हैं, वस्त्र-स्वावलम्बन, अन्न-स्वावलम्बन, सब्जी या दूध-स्वावलम्बन नहीं है। ये सब बातें तो उसमें हों ही लेकिन वास्तविक स्वावलंबन हो सकेगा, जब मूल उत्पादक-वर्ग का "नेतृत्व-स्वावलम्बन" और "व्यवस्था-स्वावलम्बन" सिद्ध होगा। नेतृत्व-स्वावलम्बन साधे बिना शासन-मुक्ति की सिद्धि नहीं हो सकती है और केन्द्रीय तंत्र तथा संचित-निधि-संचालित कार्यक्रम में से यह नेतृत्व-स्वावलम्बन नहीं निकल सकता।

आन्दोलन का साधन उसकी प्रक्रिया ही है। अगर आन्दोलन ही गणसेवकत्व का नेतृत्व तथा जनता द्वारा पोषित नहीं हो सकेगा, तो उसके द्वारा केन्द्रीय शासन या 'तंत्र' का कदापि अंत नहीं हो सकेगा। अगर समाज को तंत्र-मुक्त करना है, तो उसका साधन भी तंत्र-मुक्त-आन्दोलन ही हो सकता है। यही कारण है कि विनोबाजी ने भूक्रांति-आन्दोलन को तंत्र-मुक्त कर दिया है।

संचित-निधि द्वारा भी अगर आन्दोलन चलेगा, तो भी वह तंत्र-मुक्त नहीं हो सकेगा, क्योंकि उस निधि के संचालन के लिए एक संचालक-मंडल की आवश्यकता होगी। केन्द्रीय संचित-निधि नहीं, बल्कि जिलेवार या क्षेत्रवार विकेन्द्रित संचित-निधि से भी आंदोलन चलाने पर वह तंत्र-मुक्त नहीं हो सकेगा, क्योंकि छोटी सत्ता या बड़ी सत्ता तो वास्तव में सत्ता ही है। अतएव निधि-मुक्ति का मतलब यह नहीं है कि हम केवल गांधी-स्मारक-निधि से ही मुक्त हो जायँ, बल्कि सर्व-सेवा-संघ की संचित-निधि, गांधी-आश्रम की संचित-निधि या और इस तरह की दूसरी संस्थाओं की संचित-निधि का भी आधार छोड़ना होगा। हमारा आन्दोलन तभी स्वधर्म-स्थित होगा, जब हम जनता की चालू सहायता से ही चल सकेंगे और जब हम किसी संस्था की ओर न देख कर किसी दूसरे अनुभवी व्यक्ति के मार्गदर्शन में चल सकेंगे। इसीको विनोबाजी ने चेतन से चेतन का संबंध कहा है।

इस सिलसिले में यहाँ भूदान-कमिटी की बैठक में यह जो निर्णय हुआ कि जिलों में कमिटी की ओर से दान-पत्र आदि के कानूनी काम करने के लिए एक सेक्रेटरी की नियुक्ति की जाय; उसके बारे में कुछ कह देना चाहता हूँ। कमिटी के इस निर्णय से कुछ साथियों को भ्रम पैदा हुआ होगा कि इस प्रकार से पुरानी भूदान-समितियों का पुनर्जन्म हो रहा है। आन्दोलन तो हर प्रकार से तंत्र-मुक्त रह कर निष्ठावान लोक-सेवकों और जिला-निवेदकों के प्रचार, पर्यटन, संगठन आदि से तथा जनता की प्रेरणा और चेष्टा के बल पर चलेगा। कमिटी का काम तो इस आंदोलन के नतीजे से जो भूमिदान या ग्रामदान होगा; उसको कानूनबद्ध करना होगा तथा उन भूमि और ग्रामों के निर्माण में मदद करना होगा।

संस्थाओं का स्थान

वस्तुतः भूदान-कमिटी भी विभिन्न तंत्रबद्ध संस्थाओं की जैसी एक संस्था ही होगी। आज जितनी संस्थाएँ काम कर रही हैं, असलियत में वे इस क्रांति की वाहक नहीं हो सकतीं। वे सहायक मात्र हो सकती हैं। संस्थाओं के बारे में मैं अक्सर एक उदाहरण कहा करता हूँ: रिक्शा, ताँगा, मोटर आदि अनेक प्रकार की सवारियाँ होती हैं। सवारियाँ बाजार नहीं करती हैं। बाजार आदमी करता है। आदमी पैदल जाकर बाजार कर सकता है और चाहे, तो किसी सवारी का भी इस्तेमाल कर सकता है। उसी तरह लोक-सेवक ही क्रांति का काम चलायेंगे। संस्थाएँ सवारियाँ जैसी अपनी-अपनी जगह पर खड़ी हैं। लोक-सेवक उन्हें क्रांति के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, उनकी सहायता ले सकते हैं। लेकिन एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। आप पैदल चल कर बाजार करना चाहें, तो कर सकते हैं, लेकिन रिक्शा आदि किसी सवारी पर बैठना चाहेंगे, तो उसके चालक के द्वारा माँगा हुआ किराया आपको देना होगा। आप बिना टिकट उस पर बैठ नहीं सकते।

हमारे कार्यकर्ता कभी-कभी संस्थाओं के बारे में शिकायत करते हैं। उनकी शिकायत इसलिए होती है कि वे बिना टिकट के सवार होना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि संस्था की कोई शर्त न हो और उसे वे इस्तेमाल करें। आखिर संस्थाएँ तंत्र-मुक्त नहीं होतीं। अगर वे ऐसी होतीं, तो वे संस्था या संघ नहीं रह जातीं। उसे तंत्रबद्ध नियम और कानून से ही चलना होगा। उसका स्वभाव और स्वधर्म वही है। लेकिन इस आन्दोलन के स्वरूप में सेवक सार्वभौम और संस्था सेविका मात्र है। सेविका का मतलब यह नहीं है कि वह गुलाम हो जाय। वे भी अपनी शर्त पर ही सेवा करेंगी।

इस प्रकार सर्व-सेवा-संघ, गांधी-स्मारक-निधि, गांधी-आश्रम, भूदान-कमिटी आदि संस्थाएँ अपने-अपने स्वभाव और स्वधर्म की मर्यादा के अनुरूप ही इस आन्दोलन की सहायिका होंगी। इसकी मुख्य जिम्मेदारी तो तंत्र-मुक्त तथा निधि-मुक्त निष्ठावान सत्याग्रही लोक-सेवकों पर ही है।

कल चर्चा के दौरान में एक भाई ने कहा, "हमारी परेशानी यह है कि इस प्रदेश में कोई अनुभवी महापुरुष पूरा समय भूदान में नहीं देते हैं।" भाइयो, आज आप जिन्हें अनुभवी महापुरुष मानते हैं, वे आज से पहले अनुभवी नहीं

www.vinoba.in

थे। आप जैसे ही साधारण कार्यकर्ता थे। उनके जिम्मे दूसरी संस्थाएँ हैं। अतः वे भी आज इस क्रांति के वाहक न होकर सहायक हो सकते हैं। विनोबाजी कहते हैं कि यह युग गणसेवकों का है। तो आप सब, जो आज कम अनुभवी हैं, वही काम करते हुए अनुभवी हो जायेंगे और उसीमें से एक-दूसरे का मार्ग-दर्शन करेंगे तथा उसी में से धीरे-धीरे दो-चार व्यक्ति जब विशेष अनुभवी हो जायेंगे, तो सहज और स्वाभाविक नेतृत्व का निर्माण होगा, तब तक हम विभिन्न संस्थाओं के अनुभवी नेता लोगों से, जो हमारे आन्दोलन के शुभाकांक्षी तथा सहायक हैं, उनसे सहायता तथा सलाह लेते हुए आगे बढ़ेंगे।

'किंग' नहीं, तो 'किंग-मेकर' भी नहीं!

अब मैं लोक-सेवकों के लिए दो शब्द कहना चाहता हूँ। कल जब प्रांतीय भूदान-कमिटी 'जिला-सेक्रेटरी' रखने पर विचार कर रही थी, तो उस समय बहुत से निवेदकों की जबान से एकसाथ यह शब्द निकला कि सेक्रेटरी निवेदकों से पूछ कर नियुक्त किये जायँ! भाइयो, ये वृत्तियाँ लोक-सेवकों के स्वभाव के अनुकूल नहीं हैं। लोक-सेवक की निष्ठा सबके साथ सहयोग से काम करने में है। कोई भी सेक्रेटरी होगा, तो उसके सहयोग से काम करना लोक-सेवक की साधना का एक विषय होगा। अगर हम खुद किसी तंत्र या पद पर न रह कर, तंत्र के पद पर दूसरे को बैठाने के निर्णायक होंगे, तो भी हम तंत्र-मुक्ति के सिद्धान्त से अलग हो जायेंगे। कहावत है—"वास्तविक सत्ताधारी वह नहीं होता है, जो गद्दी पर बैठता है, बल्कि वही होता है, जो गद्दी पर बैठाता है।" अतः आप समझें कि अगर आपकी वृत्ति यह होगी कि म 'किंग' (राजा) नहीं बनूँगा, लेकिन 'किंग-मेकर' (राज-निर्माता) जरूर बनूँगा, तो आप लोक-सेवक के स्वधर्म से गिरते हैं। विनोबाजी का कहना है कि लोक-सेवकों को शून्य बनने की साधना में लगना चाहिए। तो आपको इसकी फिक्र नहीं होनी चाहिए कि कौन सेक्रेटरी बनेगा? कोई भी सेक्रेटरी बने, उसे आप सहकार दें। उसका सहकार आपको मिलता है या नहीं; इसकी जाँच करने की आवश्यकता आपको नहीं। यह अलग बात है कि भूदान-कमिटी भी निवेदक की सलाह से काम करे और उसे सफल होना है, तो वह ऐसा करेगी भी, लेकिन आपके मन में ऐसी आकांक्षा शोभा नहीं देती।

एक भाई ने कहा—"हम ईमानदारी के साथ सभी पार्टियों से बाहर रहते हैं। फिर भी सभी पार्टीवाले हमें संदेह की दृष्टि से देखते हैं। विशेषकर इस बार के सर्व-सेवा-संघ के चुनाव-प्रस्ताव के कारण हम सब जो अलग रहे, उससे अब विभिन्न पार्टियाँ हमारे काम का विरोध करती हैं।" मैं मानता हूँ कि यह बात तात्कालिक है, स्थायी नहीं। काँग्रेस के लोग मानते थे कि हम उनके घर के आदमी हैं, तो घर के काम में मदद करेंगे। जब हमने मदद नहीं दी और उससे थोड़ा असंतुष्ट हुए, तो उसमें कोई दोष नहीं; यह स्वाभाविक है। आपने देखा है कि देश के बहुत से लोग हमारे आन्दोलन से सहानुभूति रखते हैं। लेकिन उन्हींके घर का लड़का अगर घर छोड़ कर हमारे आन्दोलन में चला आता है और घर की कमाई में साथ नहीं देता है, तो अपने बच्चे से प्यार करते हुए तथा आन्दोलन से सहानुभूति रखते हुए भी वे कुछ दिन के लिए लड़के से नाराज रहते हैं। हम सब पहले काँग्रेस की ही संतान थे। अब हम अपने विचार के कारण उनके चुनाव में काम नहीं कर पाये, इसलिए उन्हें थोड़ा असंतोष हुआ। आज पार्लियामेंटरी लोक-तांत्रिक भूमिका में काँग्रेस एक विशिष्ट राजनैतिक पक्ष है। साधारण काँग्रेस-जन अपने सोचने में इस जगह भूल करते हैं। वे सोचते हैं कि स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों काँग्रेस आजादी की आकांक्षा रखने वाले हर प्रकार के विचारकों की जैसी एक राष्ट्रीय संस्था थी, आज भी उसका स्वरूप वही है। इस कारण भी हमारे बारे में उनकी गलतफहमियाँ होती हैं। निस्संदेह यह असंतोष अधिक दिन टिकने वाला नहीं है। इसी तरह वर्तमान सरकार की राजनीति तथा समाज-नीति के बारे में सर्वोदय की दृष्टि से हम अक्सर टीका करते हैं। इसे देख कर काँग्रेस के विरोधी दल समझते हैं कि ये लोग काँग्रेस के विरोधी हैं, इस नाते समय पर इनकी मदद हमें ही मिलेगी, किन्तु वैसी बात हुई नहीं। इस कारण वे अगर कुछ उदासीन हैं, तो वह भी स्थायी चीज नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।

'शून्यता' का अर्थ

यह तो हुई उनके तरफ की बात। लोक-सेवक के तरफ से भी कुछ कमियाँ हो सकती हैं। पक्षातीत रहने का मतलब यह नहीं है कि हम सभी पक्ष से बाहर रहें। 'पक्षातीत' के माने है—किसी एक पक्ष में न रहना। इसका मतलब है, सभी पक्ष में रहना; यानी किसीके बाहर न रहना। इधर विनोबाजी ने "शून्य" शब्द को खूब चालू कर दिया है। लेकिन 'शून्यता' का अर्थ क्या है? आपको मालूम ही है कि 'शून्य' की अपनी कोई कीमत नहीं। वह शून्य ही है, किन्तु वह जब किसी अंक के साथ होता है, तब उसकी कीमत होती है। अतः आप अगर शून्य बनते हैं और सबके बाहर अकेले रहते हैं, तो आपकी कोई कीमत नहीं। किसीके सहयोग से ही आपकी कीमत निखर सकती है। अगर आपके मन में अपनी कुछ निजी कीमत का भान होता है, तो समझना चाहिए कि 'शून्यता' की साधना में अभी बहुत-कुछ कसर है। इसलिए लोक-सेवक को सभी पक्षों के बाहर न रह कर सबके अन्दर रहना चाहिए, ताकि समाज को उनके अस्तित्व की पूरी कीमत मिल सके।

तपस्वी की कसौटी!

एक दूसरे भाई कह रहे थे, हमारे बड़े नेता लोग हम लोगों को तो खराद पर चढ़ाते हैं और हममें से ही कुछ लोगों को इधर-उधर नौकरियाँ दिला देते हैं! अगर हम नेता लोग ऐसा करते हैं, तो बहुत अच्छा करते हैं। इससे आपका संरक्षण होता है। पुराण की कहानी है कि जब लोग तपस्या करते थे, तो इन्द्र महाराज उनके सामने अप्सराएँ भेज दिया करते थे। जो उनके मोह में पड़ जाते थे, वे तपस्या से निकल जाते और बाकी समाज के स्तर को ऊँचा करने में लग जाते थे। अप्सरा भेजने के पीछे इन्द्र की नीयत चाहे जो हो, उस कार्य से वे समाज का बड़ा कल्याण करते थे, क्योंकि जो तपस्वी अपनी तपस्या के दौरान में अप्सराओं के मोह से विमोहित हो सकता है, वह अगर अपनी कमजोरियों को पालते हुए 'तपस्वी' के रूप में समाज में विचरने लगे, तो वह समाज के लिए वरदान न होकर भयानक अभिशाप ही बनेगा! इस प्रकार इन्द्र अगर ऐसे लोगों को अपनी हरकतों से तपस्वी समाज से अलग कर देता था, तो निस्संदेह वह समाज का बड़ा उपकार करता था। पुराने जमाने में तपस्वी के सामने उनकी परीक्षा के लिए अप्सराएँ आया करती थीं। लेकिन आज आपके सामने अफ़सरी और अशर्फियाँ आती हैं! अगर आपमें से कुछ लोग उनके मोह में पड़ कर हमारी मदद से ही आपके बीच से निकल जाते हैं, तो इस आन्दोलन का बड़ा कल्याण होने वाला है। जो लोग इधर-उधर नौकरियाँ माँगते हैं, उन्हें हम उनके लिए मदद पहुँचा देते हैं और आप लोगों में से जो लोग इस क्रांति में डटे रहने का संकल्प करते हैं, उन्हें खरादते रहते हैं, तो आपको खुश होना चाहिए। अगर आपको दुःख या ईर्ष्या होती है, तो समझना होगा कि लक्ष्य के प्रति आपकी निष्ठा में कमी है। (इसी भाषण का उत्तरार्ध पृष्ठ ५ पर है)

चुनाव और भूदान

भूदानमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रांति इतना व्यापक हमारा कार्य है और हम लोगों की ताकतें इतनी सीमित हैं कि इसके अलावा उठने वाले तात्कालिक तरंगों में हमें क्यों पड़ना चाहिए? एकाग्रता के निमित्त विमुख रहने की बात नहीं। अपनी एकाग्रता में हम इतने समग्र रहते हैं कि हम समझते हैं, उससे दूसरे सवालों का मौन से ही हम पर्याप्त जवाब देते हैं। फिर भी तुमने एक-दो-तीन करके जो बातें लिखी हैं, वे हमारे तत्त्व-विवेचन में समाविष्ट हो सकती हैं। पर उसकी शर्त है—विगतज्वरः याने निर्विकार रहना। इसमें दो पंथ हैं—"लड़ना है हर हालत में। निर्विकार लड़ सकें तो बेहतर, नहीं तो भी लड़ना ही है," यह एक पंथ। दूसरा, "निर्विकार हर हालत में रहना है। उसको सँभालते हुए लड़ सकें, तो जरूर लड़ेंगे। नहीं तो लड़ने का मोह नहीं रखेंगे। निर्विकारता में बाधा किसी भी हालत में पड़ने नहीं देंगे।"

समझने की जरूरत है कि दोनों पंथ तत्त्वज्ञानियों में चलते हैं। उनमें हमारा कौनसा है? धर्मग्रंथों में दोनों की पुष्टि में वचन मिलेंगे। मैं मानता हूँ कि अहिंसक शक्ति के विकास के लिए दूसरे पंथ का चिंतन हमारे लिए आज की परिस्थिति में (मैं तो कहने जा रहा था हर परिस्थिति में) श्रेयस्कर है। इस पर सोचो, हमारा चुनावों से अलग रहना निगेटिव विचार नहीं है। हमारा एक विधायक विचार है कि ऐसे सब गलत तरीकों का व्यक्तिगत और शाब्दिक निषेध से नहीं, बल्कि सामूहिक क्रियाशील उपेक्षा से ही हल होता है। मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा; ये चार यथाक्रम सुख, दुःख, पुण्य, अपुण्य के संबंध में हमारे सैंक्शन्स (शस्त्र अथवा बल) हैं। अपुण्य का उपेक्षा से ही परिपूर्ण उन्मूलन किया जा सकता है। मैं यहाँ सौम्यतर सौम्यतम सत्याग्रह की प्रक्रिया में उतर गया। इसका यहाँ विस्तार नहीं करना चाहता और सोचने के लिए इतने से पर्याप्त सूचन मिलेगा।

(श्री प्रबोध चोकसी के नाम लिखे पत्र से) —विनोबा

www.vinoba.in

क्रांति की राह पर

(धीरेन्द्र मजूमदार)

अब हम शोषणहीनता के लक्ष्य के बारे में कुछ चर्चा करेंगे। तंत्र-मुक्ति के साध्य के लिए जैसे साधन-रूप में आन्दोलन की प्रक्रिया भी तंत्र-मुक्त ही रहनी चाहिए, उसी तरह शोषण-मुक्ति की लक्ष्य-पूर्ति के लिए क्रांति का साधन भी शोषण-मुक्त ही होना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्व-सेवा-संघ ने गांधी-निधि या और दूसरी संचित-निधियों के सहारे आन्दोलन न चले; ऐसा प्रस्ताव किया है। अब आपको अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि संचित-निधि का अर्थ क्या है? केवल गांधी-स्मारक-निधि ही संचित-निधि नहीं है। सर्व-सेवा-संघ, गांधी-आश्रम या कोई और स्थानीय संस्था की निधि भी संचित-निधि है। अतः अगर आप लोगों ने इन संस्थाओं की निधि का सहारा लेने का कुछ अंश में भी सोचा है, तो वह प्रस्ताव के अनुकूल नहीं है और लोक-सेवकों को निश्चित निर्णय करके इन साधनों से भी मुक्त होना चाहिए।

सर्व-सेवा-संघ ने फिलहाल यह सुझाव रखा है कि सम्पत्ति-दान, अन्न-दान आदि साधनों को काम में लाया जाय। मैंने 'फिलहाल' शब्द इस्तेमाल किया है, क्योंकि सम्पत्ति-दान से लोक-सेवकों का गुजारा तथा आन्दोलन का संगठन चलने पर वह संचित-निधि भले ही न हो, लेकिन शोषण-मुक्त साधन नहीं होगा। आखिर सम्पति-दान का अर्थ क्या है? वह मजदूरों को खटा कर, व्यवसाय चला कर जो मुनाफा मिलता है, उसका एक अंश या नौकरी-वकालत आदि अनुत्पादक पेशों द्वारा प्राप्त सम्पत्ति का वह अंश मात्र ही है न? अगर इस साधन से हम अपना गुजारा करें, तो शोषण के ही एक हिस्से का हमने आधार लिया; ऐसा समझना चाहिए। बहुत से मुल्कों में और हमारे देश में भी एक विचार चलता था कि जन-कल्याण का काम चन्दा माँग कर न चला कर कुछ व्यवसाय चलाया जाय और उसके लाभ से किया जाय। उसमें जो मजदूरों का शोषण होता है, अच्छे काम में लाने के कारण वह अशुद्ध नहीं है; ऐसा माना जाता था। लेकिन यह मान्यता शुद्ध नहीं है, यद्यपि यह बात आज हममें से बहुत से लोग मानते हैं। अगर हम मानते हैं कि हमें खुद मजदूरों का शोषण नहीं करना चाहिए, तो दूसरे मुनाफा करें और हम उसमें से हिस्सा लेकर अपना काम चलायें; इसे भी कैसे मान सकते हैं। यह तो वैसा ही हुआ कि हम अपने हाथ से बछिया नहीं मारते हैं, लेकिन उसे कसाई के हाथ बेच देते हैं!

संपत्ति-दान क्यों?

इसका मतलब यह नहीं है कि हमें सम्पत्ति-दान नहीं लेना चाहिए। उसे लेना है, इतना ही नहीं, बल्कि इस यज्ञ का जोरों से प्रसार होना चाहिए, क्योंकि हमारी क्रांति का यह एक मुख्य अंग है। "जो कुछ सम्पत्ति और साधन हमारे पास है, उसे समाज को अर्पण करके ही उपभोग करना है", इस विचार का तथा वृत्ति का उद्बोधन इससे होता है। इसलिए सम्पत्ति-विसर्जन की अहिंसक क्रांति के लिए यह आन्दोलन अत्यन्त महत्त्व का है। लेकिन अगर हमें अपने काम चलाने के साधनों को शोषण-मुक्ति की सिद्धि के अनुकूल रखना है, तो इस प्रकार सम्पत्ति-दान का विनियोग उन्हीं साधनहीन मजदूरों के पुनर्वास में खर्च करना चाहिए, जिनके श्रम पर से मुनाफे के रूप में इस सम्पत्ति का निर्माण हुआ है।

अब प्रश्न उठता है कि आन्दोलन का आधार क्या हो? निस्संदेह 'श्रम' ही एकमात्र शोषण-मुक्त साधन है। इसलिए हमारा आन्दोलन पूर्ण रूप से श्रम-आधारित होना चाहिए। इसके लिए हमें व्यापक रूप से श्रम-दान का संगठन करना चाहिए। आखिर मनुष्य की श्रम-शक्ति भी किसीकी व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को श्रम-शक्ति के निर्माण में सारे समाज का सहयोग तथा सहायता मिली है। अतएव हर एक को समाज के लिए कुछ-न-कुछ श्रम करना ही चाहिए। आपको इस विचार को फैलाना चाहिए और अपने को उसीके सहारे स्थापित करना चाहिए। इसके अनेक प्रकार भी हो सकते हैं। विनोबाजी सूतांजलि के रूप में एक प्रकार हमें बताया है। आप कहेंगे कि देश का हर एक आदमी सूत नहीं कातता, इसलिए हर एक क्षेत्र में इसका व्यापक संगठन संभव नहीं है। यह सही है। इसका क्षेत्र मर्यादित है। फिर भी हमें उसे व्यापक बनाना है। लेकिन हिन्दुस्तान के हर देहात में कृषि का काम होता है और वहाँ अनाज की कटाई भी होती है। लोक-सेवक खुद श्रमदानियों के साथ किसानों के खेतों में अनाज की कटाई करके मजदूरी कमा सकते हैं और अपने आन्दोलन को उसी आधार पर चला सकते हैं। इससे न केवल साधन-प्राप्ति ही होगी; बल्कि यह कार्यक्रम खुद ही वर्ग-निराकरण की क्रांति के लिए एक अत्यंत प्रभावशाली प्रेरक-शक्ति होगी।

एक सफल प्रयोग

मैंने देखा है कि साल में डेढ़ महीना कटाई का काम होता है। खरीफ के लिए एक महीना और रबी के लिए पंद्रह दिन 'श्रम-भारती' के प्रयोग के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि एक कार्यकर्ता कम-से-कम डेढ़ रुपये दैनिक की सामग्री कमा सकता है। निस्संदेह इससे उसके एक दिन का गुजारा चल सकता है। अगर उसके साथ उस क्षेत्र के सात और प्रेमी भाई श्रम-दान के लिए मिल जायँ, तो आठ व्यक्ति डेढ़ महीना मजदूरी करके एक व्यक्ति के बारह महीने का गुजारा चला सकते हैं। बाकी खर्च के लिए इससे भी अधिक श्रमदान कटाई के लिए मिल सकता है; ऐसा मेरा विश्वास है। अगर हम निष्ठापूर्वक सम्पत्ति का मूल स्रोत यानी श्रमदान का झरना खोद निकालने में लग जायेंगे, तो हजारों की तादाद में श्रमदानी मिलेंगे।

इसके लिए निम्नलिखित कुछ कार्यक्रम बन सकता है। लोक-सेवक साल में साढ़े दस महीना विचार-प्रचार और संगठन का काम करें और डेढ़ महीना श्रमदान-यात्रा का आयोजन करें। कटाई एक बार में पंद्रह दिन चलती है। एक गाँव में अगर तीन दिन का पड़ाव रखा जाय, तो कार्यकर्ता के क्षेत्र में एक बार में पाँच पड़ाव का आयोजन करना होगा। लगभग पाँच मील पर पड़ाव रखा जा सकता है। पूर्वतैयारी के रूप में पड़ाव के गाँव में श्रमदान-समिति का संगठन करना चाहिए, जो उस क्षेत्र में श्रमदान-पत्र प्राप्त करके रखेगी, ताकि वे समय पर लोक-सेवकों के साथ कटाई में शामिल हो सकें। क्या इस प्रकार रबी, भदई तथा अगहनी फसल में पाँच-पाँच पड़ावों का आयोजन करना क्या बहुत कठिन है? यह आन्दोलन व्यापक होने पर श्रमदान से प्राप्त साधन ग्रामोदय-समितियों का कोष बन सकता है और ग्रामोदय-समितियाँ ही आगे चल कर सारे आन्दोलन की जिम्मेदारी ले सकती हैं। लोक-सेवक उनके मार्ग-प्रदर्शक मात्र रहेंगे। लोक-सेवक साल में डेढ़ महीना श्रम-यात्रा तो करेंगे ही, लेकिन बाकी साढ़े दस महीनों में उन्हें प्रति दिन तीन-चार घंटे उत्पादक श्रम भी करना होगा। इसके लिए वे जिस किसी गाँव में टिके, उसी गाँव के किसान और मजदूरों के काम में मदद कर सकते हैं। जब तक हमारा आन्दोलन इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से श्रम के सहारे नहीं चलेगा, तब तक शोषण-मुक्ति के विचार के प्रति जनता की निष्ठा आकर्षित नहीं होगी और न वास्तविक जन-शक्ति उद्बोधित ही हो सकेगी। मुझे आशा है, आप सब भाई-बहन इन बातों पर गंभीर विचार करेंगे। अगर आज हमने इस पहलू पर निष्ठापूर्वक अमल न किया, तो हमारी सिद्धि में भी संकट आ सकता है।

खतरे का संकेत!

सन् १९२१ से स्वराज-आंदोलन के आखिर तक गांधीजी ने अपने आन्दोलन को चरखे के आधार पर खड़ा करना चाहा। वे हमेशा "चरखे से स्वराज" की बात करते थे। १९२१ में ही बेजवाड़ा के कार्यक्रम में पचीस लाख चरखे चलाने का संकल्प का प्रस्ताव उन्होंने करवाया था। फिर काँग्रेस की सदस्यता का शुल्क चार आने के बदले दो हजार गज सूत रखवाने की कोशिश की। १९४१ में नियमित रूप से चरखा चलाने की शर्त को व्यक्तिगत सत्याग्रह की पात्रता के लिए अनिवार्य बताया। यह सब हुआ, लेकिन काँग्रेस के बड़े नेता से लेकर साधारण सिपाही तक ने निरन्तर चरखे का उच्चारण करते हुए भी उसका अमल नहीं किया। नतीजा यह हुआ कि महान् त्याग और तपस्या की परिणति से हमें जो सिद्धि मिली, वह पूंजीवाद के गर्भ में विलीन होती जा रही है। उसी तरह आज हम सब बड़े-छोटे कार्यकर्ता निरन्तर श्रम का उच्चारण करते रहते हैं। गाँव-गाँव में जाकर भूमिवानों से कहते हैं कि 'जितनी भूमि आप अपने हाथ से जोत सकते हैं, उतनी रख कर बाकी भूमिहीन को दे दीजिये।' लेकिन सारे उच्चारण के बावजूद हम श्रम का अमल नहीं कर रहे हैं। नतीजा यह होगा कि हमारे त्याग और तपस्या की सिद्धि भी कम्युनिज़्म के पेट में चली जायगी। व्यक्तिगत मालकियतवाद के निराकरण के साथ-साथ अगर 'श्रमवाद' के बदले में 'मैनेजरवाद' कायम रह गया, अगर 'बुद्धिजीवी' और 'श्रमजीवी' के नाम से दो वर्ग रह गये, तो संपत्ति की व्यक्तिगत मालकियत का विसर्जन भी एक बुद्धिजीवी वर्ग के संचालन तथा नियंत्रण में आने को बाध्य होगा। फलस्वरूप समाज में मैनेजर-वर्ग (Managerial Dictatorship) के अधिनायकत्व की स्थापना हो जायगी।*

* उ. प्र. सर्वोदय-सम्मेलन, झाँसी में कार्यकर्ताओं के बीच का भाषण, २८-४-५७

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

१० मअी सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

वोट की कीमत कब ?

(वीनोबा)

आज कार्यकर्ता आरामप्रीय बन गये हैं, अुनके चेहरे से आलस्य टपकता हुआ दीखता है। क्या अैसे पुरुषार्थहीन, वीर्यहीन लोगों से क्रांती होगी ? जो अुठेगा, वह क्रांती की ही बात करेगा ! अुससे कम की बात कोअी नहीं करेगा, पर अपने जीवन में फर्क नहीं चाहेगा। नीद्रा, खाना, पीना जैसा का वैसा ही रहे, शरीर को तकलीफ नहीं होनी चाहीअे, पर कहता तो है—क्रांती होनी चाहीअे ! सत्ता हाथ में आयी की हो ही गयी क्रांती ! अीतना आसान प्रकार मालूम होता है।

सत्ता की क्या हालत है ? कहते हैं, 'आप हमको सत्ता देंगे, तो हम क्रांती करेंगे।' क्या करेंगे आप ? क्या आपके चेहरे को देख कर वोट दें आपको ? कहते हैं—'हमारे वीचार क्रांतीकारक हैं।' क्या कभी आपने सेवा की है, ताकी आपके वीचार को देख कर वोट आपको दें ? क्या गुण है आपमें की अुसे देख कर आपके हाथ में सत्ता दें ? जहां राजनीतीक पार्टीयों में झगड़े हैं, वहां सत्ता आयेगी, तो भी क्या क्रांती होगी ? समझना चाहीअे की कोअी भी क्रांती-कार्य कानून के जरीये करना है, तो सब राजनीतीक पार्टीयों को अेक बनना होगा। यहां तो पचास प्रकार के भेद हैं। अेक-दूसरे का दोष बताने में ही पुरुषार्थ समझते हैं। अुस हालत में राजसत्ता हाथ में आयेगी, तो भी कीतनी आयेगी ? अीतनी अल्प सत्ता से सवाल कैसे हल हो सकेंगे ? अीसलीअे हम कहते हैं की राज्य-तंत्र में सेवा के बीना सत्ता व्यर्थ है। सत्ता में जब तक ताकत नहीं आयेगी, तब तक लोगों का क्रीयायुक्त सहयोग नहीं मीलेगा। आज सरकार से ही हर प्रकार की आशा करते हैं और स्वयं नीष्क्रीय बनते जा रहे हैं। वोट दीया, पर सहयोग नहीं मीला, तो क्या काम होगा ? अपने गांव में कम्युनीटी प्रोजेक्ट का काम चाहते हैं। अपेक्षा रहती है की सारी मदद सरकार से ही मीले ! यह नहीं कहते की काम करने के लीअे हम लोग तैयार हैं। अेक सेंटर हमारे गांव में चलाअीये। वोट के साथ आपका सक्रीय भाग होगा, तभी वोट की कीमत रहेगी ; नहीं तो वह नीष्क्रीय होगा।

(कन्यागुलनगरा, त्रीवेंद्रम, २४-४)

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ि = ी; ख = ख; संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से।

सहयोगी खेती और ग्रामदान

यदि भारत ने सहकारी खेती के तरीके को नहीं अपनाया, तो वह प्रगति की दौड़ में पीछे पड़ जायगा। ऐसी बात नहीं है कि इस दृष्टिकोण में कुछ फेरबदल न किया जा सके। इसको स्वीकार करने या न करने की बात प्रजातंत्री तरीकों पर निर्भर रहनी चाहिए तथा यह इस बात पर आधारित होना चाहिए कि जनता इसे चाहती है या नहीं।

ग्रामदान में प्राप्त गाँव सहकारी खेती के लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं, क्योंकि इन इलाकों में निजी स्वामित्व से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ सामने नहीं आयेंगी। सहकारी खेती का विचार तो सामुदायिक विकास-कार्यक्रम में निहित है और वह देहाती इलाकों की नयी आकांक्षाओं का आधार है। इसलिए अब वे गाँव कोरी स्लेट के समान काम करने के लिए खुले हैं।

केन्द्रीकरण का कुछ बुरा प्रभाव भी पड़ता है और उससे निजी पहल में बाधा पड़ती है। सहकारिता ही इससे बचने का एकमात्र तरीका है। ग्रामदान में प्राप्त गाँवों की भूमि को पुनः ग्रामीणों में बाँट देने तथा सहकारी प्रबंध के लिए सिर्फ दस प्रतिशत भूमि रखने का विचार उचित नहीं है।

मुझे इस बारे में जरा भी संदेह नहीं है कि भूदान का बड़ा महत्त्व है।

यह स्पष्ट है कि कोई भी सरकार लोगों से यह कहती नहीं फिर सकती कि वे दान में भूमि दें। मेरे विचार में सामुदायिक विकास-आंदोलन को यथासंभव ग्राम और भूदान-आंदोलनों से सहयोग करना चाहिए।

मैं भूदान-आंदोलन का स्वागत करता हूँ और एक तरीके से उसे सहानुभूति द्वारा प्रोत्साहन देने की कोशिश करता हूँ पर प्रधान मंत्री की हैसियत से लोगों से जा-जाकर यह कहना गलत मालूम पड़ता है कि वे अपनी भूमि दान में दें। लेकिन **मैं आचार्य विनोबा भावे की इस बात से सहमत हूँ कि भूमि पर जनता का समान रूप से अधिकार हो।***

—जवाहरलाल नेहरू

हमारे अधिकार

जैसे लोकमान्य तिलकजी ने कहा कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, उसको हम लेकर रहेंगे", वैसे ही गाँव की रक्षा तथा प्रतिष्ठा कायम करना, उसकी आर्थिक, सामाजिक विषमता मिटा कर उसमें सुमति, सम्पन्नता लाना हमारा अधिकार है। हमारे बच्चों को कोई खिलाये, पालन-पोषण करे, तो हम लज्जा का अनुभव करते हैं। हमारा हक्क छीना-सा लगता है। वैसे हमारे गाँव का कोई पालन-पोषण, रक्षण करने का दावा करे, यह हमारे अधिकार में खलल डालना है। इसको सहन न करना हमारा धर्म है। हम गाँव का प्रबंध स्वयं करें, यही तो ग्रामराज्य है। और यह हमें करना है। गाँव के जमीन का स्वामित्व गाँव का है, जिससे गाँव में परिवार की भावना बनी रहे। धरती माँ है—हमारे ग्राम-परिवार का केन्द्र। इसलिए हमारा यह हक है कि यह पारिवारिक भावना जागृत करने के लिए गाँव के छोटे-बड़े ग्रामदान की माँग उन लोगों से करें, जो अपने छोटे से परिवार में चिपटे हुए, मोह किये हुए हैं।

ग्रामराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, उसको लेकर रहेंगे, यह संकल्प सभी सुहृदयवाले भाई-बहनों को करना ही चाहिए। ग्रामराज्य की बुनियाद है ग्रामदान, यह स्मरण रहे।

४-३-५७ —राघवदास (बाबा)

* विकास-आयुक्तों के सम्मेलन, मसूरी में ता. २९ अप्रैल '५७ को दिये भाषण से।

www.vinoba.in

केरल के साहित्यिकों के बीच

(विनोबा)

हमको खुशी है कि आपने यहाँ आकर हम पर अनुग्रह किया। आप लोगों की हम बहुत इज्जत करते हैं। जो सर्वोदय-समाज हमारे मन में है, उसमें साहित्यिकों-कवियों की बहुत क़दर है, बल्कि नैतिक सत्ता इन्हीं लोगों के हाथ में होगी। सर्वोदय-समाज में जिसे सत्ता कहते हैं, वह नहीं होगी, परंतु नैतिक अधिकार होगा। वह ऐसे ही लोगों के हाथ में होगा, जो दूर देख सकते हों। हमारे यहाँ संस्कृत में 'कवि' शब्द की व्याख्या "क्रांतदर्शी" के रूप में की है, याने जो दूर का देखता है—दूर याने भविष्य ही नहीं, अंतर में भी, जो अंतर में भी पैठ सकते हैं और दूर के काल में भी पैठ सकते हों। ऐसे क्रांतदर्शी को हम कवि कहते हैं। हिंदुस्तान की सभ्यता ने साहित्यिकों और कवियों को ऊँचा स्थान दिया है। यहाँ पर जिनकी धार्मिक सत्ता चली, वे सब बहुत बड़े कवि थे। आज तक हजारों वर्षों से वाल्मीकि, व्यास, शुक की जितनी सत्ता चली, उतनी और किसीकी सत्ता नहीं चली और उनकी यह सत्ता केवल धर्म तक ही सीमित नहीं रही, कुल जीवन पर–ऐहिक, पारलौकिक और पारमार्थिक जीवन पर–भी रही है। पश्चिम में कवि-साहित्यिक कम नहीं हुए, परंतु उनकी लोक-जीवन पर सत्ता नहीं चली, जैसी भारत में चली। शेक्सपीयर महाकवि हो गया। समाज-जीवन पर उसका कुछ-न-कुछ असर हुआ और साहित्य पर तो हुआ ही, पर लोकजीवन पर वाल्मीकि का जो असर हुआ, वह शेक्सपीयर का नहीं हुआ। होमर ने ओडिसी नाम का एक बड़ा काव्य लिखा है—'महाभारत' की तुलना में तो वह छोटा ही है! तो, ओडिसी की सत्ता ग्रीस-यूरोप पर वैसी नहीं रही, जैसी कि व्यास की आज यहाँ चलती है। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि आप लोगों की बहुत इज्जत करते हैं। इन दिनों दिल्ली में साहित्यिक 'अकॅडिमी' बनी है। भारत के लिए यह कोई नयी कल्पना नहीं है, यद्यपि उन्हें नया शब्द ढूँढ़ना पड़ा है। कहना यह चाहते हैं कि साहित्यिकों को आधार देने की बात पुराने काल से भारत में चली आयी है। अनेक राज्यों के राजाओं द्वारा साहित्य की कदर हुई है और मदद भी मिली है, पर भारत के साहित्यिकों ने उस मदद की बहुत ज्यादा कदर नहीं की।

तमिलनाड के महापुरुष माणिक्यवाचकर पांड्यन् राजा के राज्य के प्रधान मंत्री थे। उन्होंने वहाँ का थोड़े दिन तमाशा देखा! जीवन नीरस मालूम हुआ, तो सारा छोड़ कर गाँव-गाँव घूमने लगे। सुन्दर भजन लिखे। पागल है, तमिलनाड की जनता उनके पीछे। इस तरह के अनेक सत्पुरुष, साहित्यिक और कवियों के नाम आपके सामने गा सकता हूँ। हिंदुस्तान के राजा-महाराजाओं से पुरस्कार मिला, पर शायद उससे ज्यादा पुरस्कार जनतांतर्गत परमेश्वर से मिला था। उसी आधार पर हमारे यहाँ के साहित्यिक और कवि जीये और लोकजीवन में पैठ गये। अगर वे राजाश्रय पर खड़े हुए होते, तो जहाँ राजा गये, वहाँ वे भी चले जाते! हिन्दुस्तान तो एक ही राजा को जानता है: 'राजा राम।' सर्वोदय-समाज की कल्पना हमें इसीलिए प्रिय है कि वह कोई सत्ता नहीं माँगता, केवल रामजी की सत्ता माँगता है। हिंदुस्तान के साहित्यिक लोक-जीवन में घुलमिल गये, इसका एक ही कारण है–वे राजाश्रय पर नहीं रहे, ऐच्छिक द्रारिद्रय में रहे।

गीता में 'योगारूढ़' का वर्णन किया है। जिसका योग अपूर्ण रह जाता है, उसे पूर्ण करने के लिए उसे दूसरा जन्म मिलता है। योग याने काँग्रेस-योग नहीं, साम्ययोग। नया जन्म किस प्रकार का मिलता है? वर्णन में गीता ने 'शुचीनां श्रीमतां गेहे' शब्द इस्तेमाल किये हैं। पवित्र और श्रीमान् कुल में, घर में। श्रीमान् का अर्थ पैसेवाला नहीं, अध्ययन की सामग्री और साधन जिस कुल में है, ऐसे श्रीमान् कुल में जन्म मिलता है। दूसरा जन्म और भी दुर्लभ है। 'शुचीनां श्रीमतां गेहे'–जन्म तो दुर्लभ है ही, पर दूसरा तो और भी दुर्लभ है– 'दुर्लभतरं' है। 'तर' प्रत्यय का उपयोग किया है। शंकराचार्य भाष्य लिख रहे हैं। दूसरा जन्म कौनसा? धीमान् योगियों के कुल में। एक बाजू श्रीमान् और दूसरी बाजू धीमान् को खड़ा किया है, वैसे ही एक बाजू शुचि और दूसरी बाजू योगी को खड़ा किया है। पवित्र श्रीमान् पुरुष के कुल में जन्म पाना बड़ा भाग्य है, पर उससे भी अधिक भाग्य है–श्रीमान् योगी के कुल में जन्म पाना। बड़ी लाइब्रेरीवाले के घर जन्म पाने से अधिक भाग्य है, ज्ञानी के घर जन्म पाना। साधन-सामग्री से बढ़कर धी है। धीमान् योगी के कुल में जन्म पाना दुर्लभ है। शंकराचार्य अपनी ओर से इसमें एक और शब्द जोड़ दे रहे हैं–"धीमान्" याने दरिद्र कुल, इस अर्थ में। अद्भुत भाष्य है। बुद्ध का जन्म 'शुचीनां श्रीमतां' घर में हुआ। उसका उन्होंने अत्यंत ठीक उपयोग किया। कारुण्यपूर्ण दृष्टि से दुनिया की ओर देखा। यह 'शुचीनां श्रीमतां' का उदाहरण हुआ। अब 'योगीनां धीमतां' का उदाहरण चाहिए। शंकराचार्य स्वयं गरीब के घर जन्मे थे। इस वास्ते 'धीमतां' के साथ 'दरिद्राणाम्' शब्द जोड़ दिया।

अक्सर देखा गया है कि हिंदुस्तान के साहित्यिक गरीबों में जाकर उनके समान जीवन जीने में अपना भाग्य समझते थे। दारिद्रय एक चीज है और ऐच्छिक दारिद्रय दूसरी चीज है। वे दारिद्रय वरण करके जनता में घुलमिल गये, इसलिए जनहृदय पर उनका गहरा और अमिट प्रभाव है। इसलिए हम आपका बहुत गौरव करते हैं और आपकी यहाँ उपस्थिति अनुग्रह समझते हैं।

हम तो सबसे कुछ-न-कुछ मांगने वाले हैं। जिसके पास जो शक्ति है, उसका दान वह सबको दे। वाणी, श्री, कीर्ति, क्षमा, मेधा, धृति, स्मृति–ये सात बड़ी शक्तियाँ हैं। वाणी बड़ी भारी शक्ति है। स्मृति-क्षमा-धृति, ये सारी महान् शक्तियाँ समाज के लिए बड़ी प्राणदायी हैं। साहित्यिकों में कम-से-कम दो शक्तियाँ वाक् और मेधा, अवश्य होनी चाहिए। और भी हो सकती हैं, परंतु इन दो के बिना कोई साहित्यिक नहीं बन सकता। ये जो शक्तियाँ हैं, उसका दान सर्वोदय के काम को मिले, ऐसी हमारी नम्र अपेक्षा है।

कवि को प्रेरणा कब मिलती है? इंग्लैण्ड को साम्राज्य मिला, वह साम्राज्य के शिखर पर बैठ गया, तो वहाँ की काव्य-शक्ति कम हो गयी! जब तक वे साम्राज्य-शिखर पर नहीं थे, तब तक वहाँ काव्य-शक्ति थी। आज क्या हालत है वहाँ? कुल कोई साढ़े पाँच करोड़ आबादी है इंग्लैण्ड की। केवल अकेले लंडन में १/५ आबादी रहती है। और भी कई बड़े-बड़े शहर हैं, वहाँ सबका संबंध अब कुदरत से रहा नहीं। आश्चर्य में पड़े हैं। दुनिया भर से खाना आता है। सारा इंतजाम सरकार कर देती है! अब वहाँ का जीवन कवि को स्फूर्ति नहीं देता। यही हालत सब देशों की है। जब लोगों का जीवन प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ होता है, तब वह जीवन उन्नत होता है। जब मानव हृदय उन्नत होता है, जब प्रकृति से संबंध, समत्व होता है, तब साहित्यिकों को प्रेरणा मिलती है।

सर्वोदय-समाज याने हरएक को जमीन हो। भूमिहीनों को भूमि मिले, इतने भर से समाधान नहीं। काशी के विद्वान् वैदिक पंडितों ने सभा की हमारे साथ। उन्होंने कहा कि आजकल वेदविद्या को आश्रय कम मिलता है। हमने कहा, वेदाध्ययन के साथ, खेती करने को राजी हों–तो जमीन दिला सकेंगे। कहने में खुशी होती है कि उन्होंने समिति बनायी और कहा कि वेदाध्ययन के साथ खेती करेंगे। अगर वैदिक अपने हाथ से खेती करेंगे, तो वह बहुत बड़ा काम होगा। वेद में मनुष्य-जीवन को कृषि-जीवन ही कहा है। पंच सृष्टि समाज की बात करते हैं। वेद में 'पंच कृष्टयः' याने पंच कृषिकार, ऐसा शब्द आता है। पंच समाज याने पंच कर्षकः–बल्कि भगवान् कृष्ण शब्द भी कृषि से पैदा हुआ है। 'कृष्ण' में कृष् धातु है। कृष् याने खेती करना। हिंदुस्तान की हवा में जो भी खेती करता है, उसका रंग काला हो जाता है, इसलिए 'कृष्ण' का अर्थ काला हो गया। मूल अर्थ है–खेती करने वाला। इसलिए शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल जीवन खेती करने वाले का है। तिरुवल्लुवर की कृति कुरल में हमने एक सुन्दर वाक्य पढ़ा: "उऴ् बुंदुंडु वाऴवारे वाऴवार"—याने जो खेती करके जीते हैं, वे ही जीते हैं।

हम चाहते हैं कि कवि भी एक एकड़ जमीन ले लें और सृष्टि से संबंध जोड़ें। कुदरत के साथ सबके जीवन-संबंध जुड़ जायँ, यह सर्वोदय के लिए जरूरी है। सर्वोदय में कोई भी काम ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। उसमें समत्व-योग साधना है। उसमें अपना स्वार्थ परार्थ की शरण में ले जाने से हृदय उन्नत होता है। तीन कारणों से ही कवियों को स्फूर्ति मिलती है—(१) मानव हृदय की उन्नति। (२) सामाजिक समत्व; और (३) प्रकृति के साथ संबंध। हम समझते हैं कि सर्वोदय के काम में ऐसी शक्ति है कि जिससे साहित्य को उद्देश्य और प्रेरणा मिल सकती है। हम नम्रता से माँग पेश करते हैं कि आप अपना वाक्दान इस आंदोलन को दीजिये।

(त्रिवेंद्रम्, ता० २३-४)

www.vinoba.in

मानवता के उद्धार की पावन-स्थली

(ब्रजलाल वर्मा)

आचार्य विनोबा के भूदान-यज्ञ का अनुष्ठान १८ अप्रैल १९५१ को प्रादुर्भूत हुआ था। इस अनुष्ठान को चलते छह वर्ष हो गये। अनुष्ठान का प्रभाव भारतीय मानस पर दो प्रकार का हुआ है—एक यह कि बड़ी-बड़ी मिल्कियत वाले—चाहे वे भूमि के स्वामी हों या सम्पत्ति के—सोचने लगे हैं तथा उन्हें कुछ निश्चय-सा हो चला है कि अब भूमि या सम्पत्ति की विषमता अधिक दिन चलने वाली नहीं, वह तो सार्वजनिक सम्पत्ति बन कर रहेगी। इस विचार से उक्त प्रकार के व्यक्तियों का मानस चिंतित एवं विक्षुब्ध हो चला है। वे अपनी सम्पत्ति के प्रति ममता दूर करने के लिए जैसे एक विवशता का अनुभव कर रहे हैं। दूसरे प्रकार का प्रभाव उन व्यक्तियों पर है, जो विश्वास करते हैं कि विनोबाजी का कार्य आग्रह पूर्ण होकर रहेगा। यह विश्वास उक्त प्रकार के व्यक्तियों को बल, शक्ति और प्रेरणा दे रहा है, जिससे वे भूमि और सम्पत्ति से सोत्साह वीतराग हो गये हैं। वे किसी भी क्षण अपना एकाधिपत्य जन-जीवन के लिए विसर्जित कर देने के लिए कटिबद्ध हैं।

विनोबा ने अपना सत्प्रयोजन सन् सत्तावन् के अंत तक पूर्ण कर देने की घोषणा की है। इस समय निस्संदेह विनोबा ने भारतीय मानस की दैवी और आसुरी वृत्तियों का विचित्र द्वन्द्व उत्पन्न कर दिया है। प्रत्येक भारतवासी के मन में एक ऊहापोह जाग्रत हो गया है कि एकाधिपत्य छोड़ें या न छोड़ें! महापुरुष अपने अनुष्ठानों के पूर्ण करने में मनुष्य की स्वाभाविक दुर्बलताओं से कोई समझौता नहीं करते। वे यह भी नहीं देखते कि इसमें समाज को पीड़ा होगी या सुख मिलेगा, क्योंकि वे तो महान् लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपना सब-कुछ उत्सर्ग कर देते ही हैं, समाज का भी सब-कुछ होम देने में निर्मम भाव से आग्रही होते हैं। विनोबा वही कर रहे हैं। भारत की इस भूदान-क्रांति की ज्वाला की सबल अर्चियाँ विदेशों तक पहुँच चुकी हैं! एशिया के इस संत की साधना की सीमाएँ भारत तक ही नहीं, दुनिया को लाँघ रही हैं और सारा संसार मानव-मानव के बीच की नियतिवादी विषमता को दूर करने के लिए विवश हो रहा है। मार्क्स और एंजिल के दर्शन के सूत्र-विस्तार ने कालक्रम से सारे संसार को आबद्ध किया। उससे कहीं अधिक शक्ति से विनोबा का यह अर्पण है। आदान और भूदान इसीका नाम है। यह समस्त लोकभुवन को विद्ध कर लेगा, इसमें किंचित संदेह नहीं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कालड़ी-सम्मेलन में भारत की एकाधिपत्य प्रणाली के विसर्जन का आयोजन खुले रूप से होने जा रहा है। यह सम्मेलन भूदान-यज्ञ तथा सर्वोदय का निर्णायक सम्मेलन बनेगा, ऐसा लगता है। इस समय यदि कोई संकटग्रस्त है, तो वह निर्धन नहीं, धनी है। निर्धन का विद्रोह, सम्पत्तिहीन की बगावत का पर्वत धनी के सिर आकर फटने वाला है। विनोबाजी निर्धन की अपेक्षा इस धनी के त्राण की बात सोचते हैं। वे विद्रोह का कारण ही दूर कर देना चाहते हैं। कारण दूर कर देने पर व्याधि का समूल निराकरण हो जाता है। आयुर्वेद में कारणों के अनुसंधान को ही निदान कहते हैं। विनोबा का निदान एक वर्ष के भीतर ही व्याधि का नाश करने जा रहा है, परन्तु रोगी भी इस औषधि का सेवन तो करे। कालड़ी-सम्मेलन भारतीय मानवता की उद्धार-स्थली सिद्ध हो यह हमारी कामना है। पुण्यश्लोक शंकराचार्य की यह जन्मस्थली कोटि-कोटि विपन्न जनता के लिए सहस्रधा विकसित हो, अतिफलित हो, यह भी हमारी आकांक्षा है।

राजस्थानी भाषा में :

गाँव-दान सूं ग्यारा लाभ

(१) गाँव जमीन रो गाँव घणापो हुज्यासी।
(२) गाँव जमीन रा झगड़ा सारा मिट ज्यासी॥
(३) गाँव जमीन गाँव रा मिनखाँ सारू बँट ज्यासी।
(४) गाँव में गोचर व गांवाई खेत रह ज्यासी॥
(५) गाँव में सीलिंग व चकबंदी झगड़ो मिट ज्यासी।
(६) गाँव में श्रम साधन सब आपस में देसी॥
(७) गाँव में सुख-दुख में सब आडा आसी।
(८) गाँव में गाँवरा धंधा चालू होसी॥
(९) गाँव में गाँवरी गाँवाई दुकान रहसी।
(१०) गाँव में कोई कर्जदार नहीं होसी॥
(११) गाँव में गाँवाई सर्वोदय-पंचायत रहसी।

—बद्रीप्रसाद स्वामी

एक चेतावनीपूर्ण घटना!

(वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी)

गत ता० १८ अप्रैल को भू-जयंती के अवसर पर बिहार प्रदेश के गाँव-गाँव में भूदान में मिली भूमि के बँटवारे का कार्यक्रम रखा गया था। यह खुशी की बात है कि स्थान-स्थान पर यह दिवस सारे प्रांत में बड़े ही शानदार ढंग से मनाया गया और जिन दाताओं की भूमि अब तक नहीं बँट पायी थी, इस अवसर पर बँटने योग्य बहुत-सी भूमि का वितरण भी गाँव-गाँव में सभाएँ करके दाता या ग्रामीणों की सम्मति से किया गया।

इसी पुनीत अवसर पर पूर्णियाँ जिला के ढोलबज्जा नामक (फारबिसगंज के निकट) एक प्रसिद्ध गाँव में एक कल्पनातीत घटना घटी! वितरण-सभा में सभा-समाप्ति पर जब भूदान के नारे लगाये जा रहे थे, तब गाँव के कुछ प्रमुख धनी व्यक्तियों ने गाँव के बाहर से कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए आये हुए कार्यकर्ताओं को बेरहमी से पीटा, उनके कागजात और रुपयों को छीन लिया।

इस गाँव में बाहर से इस दिवस को सम्पन्न करने के लिए गये हुए कार्यकर्ता थे: श्री वासुदेव लाल दास, जो वर्षों से फारबिसगंज थाने में भूदान-कार्य करते रहे हैं। इन दिनों उसी थाने में भू-वितरित गाँवों में निर्माण-कार्य के लिए गांधी-स्मारक-निधि की ओर से वे नियुक्त हैं। इन पर सबसे अधिक मार पड़ी है और वर्तमान समय में पूर्णियाँ सदर हॉस्पिटल में इलाज के लिए भर्ती हैं। इनके सिवा सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा के दो कार्यकर्ता, प्रशिक्षण के शिक्षार्थी श्री शशिधर झा तथा श्री बंशनारायणजी थे। इन दोनों को भी घसीट-घसीट कर पीटा गया है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन कार्यकर्ताओं की ओर से कोई हिंसामूलक कार्य नहीं किये जाने पर उनपर इस प्रकार की जो मार पड़ी है, यह एक रहस्यमय घटना है! भूदान-कार्यकर्ताओं की ओर से पीटने वालों के विरुद्ध कोई मुकदमा दायर नहीं किया गया है, पर जनता की अदालत में सारी घटना रख देने तथा जन-जागृति के द्वारा ऐसी घाँधली का सदा के लिए अन्त करने की दृष्टि से २८ अप्रैल को उस गाँव में एक विराट सभा का आयोजन किया गया।

सन् '५७ में अहिंसक भू-क्रांति के द्वारा भूमि-समस्या के हल का प्रयत्न किया जा रहा है। ढोलबज्जा की घटना बता रही है कि जमीन पर मालकियत बनाये रखने की इच्छा रखने वाले किस हद तक जाने को तैयार हैं! पर ऐसी घटनाएँ व्यक्तिगत मालकियत कायम रखने में सफल होने के बजाय १९५७ के लक्ष्य को शीघ्र सफल बनाने में ही सहायक होने वाली हैं। जिन भाइयों ने इस प्रकार का जघन्य कुकृत्य करके पूर्णियाँ जिला एवं खासकर ढोलबज्जा गाँव पर कलंक का टीका लगाया है, आशा है, ईश्वर उन्हें शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करेगा और वे सदा के लिए इस प्रकार के हिंसात्मक कार्य से अपने को अलग रखने का संकल्प करके अहिंसात्मक भू-क्रान्ति को सफल बनाने के लिए प्रयत्नशील होकर अपने इस पाप का प्रायश्चित्त करेंगे। ईश्वर हम सबको शक्ति प्रदान करें—ऐसे अत्याचारों को सहन कर अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए अधिकाधिक प्रयत्नशील बने रहने का।

बेला सत के आवन की!

मन से अपना काम करें हम, मन से अपना काम करें।
पल-पल बन सत्तावन आया, पल-पल इसके जावन की।
घर-घर ये संदेश सुनायें, बेला सत के आवन की॥ बेला सत०॥
ना पल भर बरबाद करें हम, कल करना वो आज करें हम।
मन से अपना काम करें हम, मन से अपना काम करें॥
सेवा कर्म हो, सेवा धर्म हो, सेवा रिश्ता-नाता।
तेरे पथ पर चल कर बाबा, जीवन गीता-माता हो॥ जीवन०॥
नवयुग का आह्वान सुनें हम, सतयुग का निर्माण करें हम।
मन से अपना काम करें हम, मन से अपना काम करें॥
साँस-साँस में जीवन बीते, पाँव बढ़ायें मंजिल।
प्रभु के हाथ बड़े बलशाली, कट जाये मुश्किल रे॥ कट जाये०॥
तेरे, तेरा काम करें हम, मन से अपना काम हम।
मन से अपना काम करें हम, मन से अपना काम करें॥

—प्रियतमभाई

---

www.vinoba.in

केरल की समस्याएँ

(विनोबा)

प्राचीन काल से केरल की भूमि सब दुनिया के संपर्क में रही है। ग्रीक, रोमन, अरब, चीनी, इन सब लोगों का संपर्क इस समुद्र के किनारे से रहा है। उसके बाद पुर्तगीज, डच, फ्रेंच, इंग्लिश ये लोग तो आये ही हैं। उसके पहले आर्य, द्रविड़ यहाँ पहुँच चुके थे। यह जो वैभव इस प्रदेश को प्राप्त है, वह विशेष प्रकार का वैभव है। अपेक्षा यह होती है कि यहाँ के मनुष्य के विचार संकीर्ण नहीं, व्यापक रहें। इसलिए हमने विश्वास यह रखा कि भूदान का विचार यहाँ के लोग सहज ग्रहण करेंगे, क्योंकि यहाँ के लोग किसी एक जाति के संपर्क में नहीं आये, तो दुनिया से इनका संपर्क रहा। हम देखते भी हैं कि यह विचार लोगों को जल्दी समझ में आता है। पर इन दिनों शिक्षित लोग साम्यवाद, समाजवाद, वेलफेयर-स्टेट आदि वादों में पड़े हैं। लोकहित-प्रधान समझने के बजाय विशिष्ट कल्पनाओं में वे फँस गये हैं, इसलिए उसी पर विचार करते हैं। भिन्न-भिन्न वादों पर याने कल्पनाओं पर विश्वास रखा है और सोचते हैं कि हमारी विचार की जब गवर्नमेंट आयेगी, तब सत्ता के जरिये लोगों की अच्छी सेवा हो सकेगी। इस वास्ते पहले अधिकार प्राप्ति चाहते हैं और बाद में सत्ता के जरिये सेवा। आखिर अधिकार याने क्या ? अधिकार याने आज्ञा। पर लोगों को आज्ञा करने के बजाय, लोग जो आज्ञा करेंगे, उसका पालन, हाथ में अधिकार आने के बाद करना पड़ता है। कोई भी सरकार हाथ में सत्ता लेती है, तो यह नहीं कर सकती कि अपने ही विचार से राज चलाये, बल्कि उसको लोगों की आज्ञा लेनी ही पड़ती है। लोकमत का डर उसके पीछे रहता है। मान लीजिये कि लोग सिगरेट पसंद करते हैं, तो गवर्नमेंट जिसके हाथ में है, वे यह नहीं कर सकते कि लोगों को सिगरेट से मुक्ति मिले, पर अच्छी सिगरेट मिलने की योजना उनको करनी होगी ! याने लोग जो चाहते हैं, उसके मुताबिक लोगों की सेवा करनी होगी। इसलिए लोगों का नेतृत्व करने की शक्ति सरकार में नहीं रहती, न लोगों को योग्य मार्ग पर ले जाने का काम सरकार कर सकती है। लोगों की आज्ञा, राय जान कर उसके मुताबिक सेवा करनी होगी। इसीलिए सत्ता के जरिये सेवा यह कोरा भास ही है।

मान लीजिये कि भूमि का मसला हल करना है, तो उससे जो भी सवाल जुड़े हैं, उन सब पर सरकार को सोचना पड़ेगा। कुछ छोटे मालिक हैं, कुछ बड़े। वे मजदूरों से काम करवाते हैं। यहाँ तो मालिक-मजदूर, दोनों दरिद्री हैं, क्योंकि कुछ मालिकों के पास एक-डेढ़ एकड़ ही जमीन होती है। ऐसे कई प्रश्न सामने खड़े होंगे। अब कानून से जमीन छीन लेंगे, तो लिटिगेशन (मुकदमेबाजी) बढ़ेगा। सीलिंग बनायेंगे तो वह भी नहीं बनेगा, क्योंकि नीचा सीलिंग बनायेंगे, तो लोग असंतुष्ट होंगे और मुआवजा भी देना पड़ेगा। ऊँचा सीलिंग बनाते हैं, तो गरीबों के लिए कुछ भी नहीं कर सकेंगे। असेंब्ली में बिल लाने पर सरकारी पार्टी में भी भेद हो सकते हैं। सब तो निर्लोभी नहीं रह सकते हैं। लोग कहते हैं दुनियाँ में अनेक पार्टियाँ हैं। लेकिन हम कहते हैं पार्टियाँ दो ही हैं–एक कंजूस पार्टी और एक उदार पार्टी। इस प्रकार के लोग सब पार्टियों में रहते हैं। जब जमीन का सवाल आयेगा तब पार्टी आदि नहीं रहेगी, वहाँ दो पक्ष बन जायेंगे–कंजूस और उदार।

इसलिए सत्ता के जरिए हमारे सवाल हल होंगे, यह विचार ही गलत है। मसले तब हल होंगे, जब लोग उन्हें हल करना चाहेंगे और वे स्वयं उस पर विचार करेंगे। इस वास्ते प्रश्न हल करने के लिए भिन्न वादों की मदद नहीं होगी। उससे तो गाँव में पक्ष-भेद होते हैं और गाँव के टुकड़े पड़ रहे हैं। अभी चुनाव हुआ। गाँव-गाँव में भेद पड़े। गाँव-गाँव मिल कर देश बनता है। इस वास्ते देश का भला कैसे होगा ? वाद तो चलते ही रहेंगे। जैसे द्वैत और अद्वैतवाद है। लेकिन रामानुज और शंकर, दोनों यही कहेंगे कि सत्य का आचरण करो, परस्पर स्नेह रखो, सहयोगी बनो। धर्म में एकता चाहिए या नहीं ? फिर परस्पर प्रेम होना चाहिए या नहीं ? ऐसे तत्त्व-सिद्धांत की चर्चा विद्वानों में चलेगी। लेकिन गाँव के लोगों में परस्पर प्रेम का और नीति का ही संदेश फैलाया जायगा। इस वास्ते हम कहते हैं कि आपके अनेक वादों का परिणाम गाँव पर नहीं होना चाहिए। हमारे गाँव में एक हैं–कम्युनिस्ट और एक हैं–सोशलिस्ट, एक है–काँग्रेसवाला। उनमें परस्पर मतभेद हैं। गाँव में गंदगी है। तो गाँव की गंदगी मिटाने के लिए वे सब एक होंगे या नहीं ? पर वे झगड़ते ही रहेंगे, तो गाँव गंदा रहेगा। तो, होना यह चाहिए कि हमारे गाँव में कम्युनिस्ट, काँग्रेस, सोशलिस्ट कोई पक्ष नहीं, हमारे गाँव में एक ही पक्ष होगा। वह होगा–ग्राम-पक्ष, एक ही वाद–ग्रामवाद। हमारे गाँव का भला हो, यही हमारा वाद है।

सर्वोदय का अर्थ क्या है ? आपके राजनैतिक विचार कुछ भी हों, धार्मिक विचार कुछ भी हो, आपकी उपासना-भक्ति कुछ भी हो, परंतु जीवन के लिए आवश्यक चीजें सबके पास समान अंश में हैं या नहीं यह सोचना है। गाँव में स्वच्छता होगी। सबको पूरा काम मिलेगा, ऊँच-नीच का भेद नहीं, झगड़े नहीं, व्यसन नहीं, शादी में सबकी मदद, गाँव की संपत्ति बँटेगी, कोई पक्ष-भेद या जाति-भेद नहीं। सब एकरूप, सबकी एकता, कॉमन प्लेटफार्म होगा तब गाँव का भला होगा। इसका नाम है सर्वोदय। सबका भला जिन कामों से होता है, उन कामों में सबका सहयोग होना चाहिए।

एक ग्राम एक परिवार हो

केरल की समस्या तभी हल होगी, जब एक-एक ग्राम एक परिवार हो जायगा। तब तक लाखों कोशिशें क्यों न हों, फिर भी गाँव का भला होने वाला नहीं है। हम लोग भ्रम में हैं कि फलानी पार्टी अधिकार में आयेगी, तो हमारा भला होगा, परंतु यह ख्याल गलत है। गाँव जब एक होगा, तभी गाँव की समस्याएँ हल होंगी। राजनीतिक पार्टी से गाँव का भला नहीं होगा।

जाति-भेद मिटाने चाहिए, यह हम समझ सकते हैं। धार्मिक कल्पनाओं की बाधा सार्वजनिक काम में नहीं आनी चाहिए, यह भी हम मानते हैं। जैसे जाति-भेद मिटने चाहिए, ऐसा हम मानते हैं, वैसे ही यह पक्ष-भेद भी मिटने चाहिए। यह जब तक हम नहीं समझेंगे, तब तक गाँव में टुकड़े पड़ेंगे, गाँव की उन्नति नहीं होगी। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि आप अपने वाद या झगड़े आपस में करते रहो, पर लोगों में लोकहित की ही बात करो। सारे गाँव का भला कैसे होगा, इस पर सोचो और समझाओ। पर दुनिया के झगड़े क्यों गाँव में लाते हो ? हिंदुस्तान की कुल पार्टियों को एक होकर एक कॉमन प्लेटफार्म बनाना चाहिए। गाँव में मशीनरी लाना कि नहीं आदि वाद हम नहीं करना चाहते। हम यही कहते हैं कि आप मशीनरी चाहते हैं, तो इन गाँवों में कौनसी मशीनरी लाओगे, यह तो बताइये। तो, वे कहते हैं कि पचास साल तक तो हो ही नहीं सकेगा। फिर क्यों सोचते हो मशीनरी बढ़ाने की बात ! रूस, अमेरिका की बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ते हैं और उसी तरह यहाँ खेती करना चाहते हैं। कहते हैं ट्रैक्टर चलाओ। अमेरिका वाले ट्रैक्टर चलाते हैं, तो ट्रैक्टर वहीं बनता है। पेट्रोल वहाँ है और बैल वे खा जाते हैं ! पर भारतीय संस्कृति में तो बैल को खाते नहीं। तो बैलों का और ट्रैक्टर का, दोनों का पालन करना होगा। हम यंत्रवाद की चर्चा करना नहीं चाहते। हम कहते हैं, गाँव वालों के काम के क्या साधन देते हैं, सो बताइये। आप नहीं चाहते, तो चरखा का हमारा आग्रह नहीं है। तो कहते हैं, मिल को उत्तेजन देना चाहिए, मिल का राष्ट्रीयकरण किया जायगा। हम सस्ता कपड़ा देंगे, पर हम कहते हैं, गाँववालों को काम क्या दोगे, यह बतायें। तो कहते हैं, आपको कुछ दीखता नहीं ! तो क्यों नहीं देते हो करघा उनके हाथ में ! जब आपका काम होगा, तब चाहोगे तो लोग उसको छोड़ देंगे। इस तरह तुम्हारे सब वाद हमारे गाँव के लिए बेकार हैं।

यह व्यावहारिक बात है। सर्वोदयवाले व्यावहारिक बात करते हैं। मार्क्स ने पुस्तक लिखी है, पर उसने हमारे गाँव नहीं देखे थे। यहाँ गाँव-गाँव में जाति-भेद है। जमीन के टुकड़े हैं। आपकी पुस्तक हमारे गाँव को किस काम की ? जो हमारे गाँव के लिए उपयोगी चीज है, वह अगर उस ग्रंथ में हो, तो हम लेने के लिए तैयार ही हैं।

भूदान-ग्रामदान प्रत्यक्ष व्यावहारिक बातों से प्रवृत्त हुआ है। यह वाद या 'थियरी' नहीं है। प्रत्यक्ष प्रैक्टिकल की बात हम सामने रख रहे हैं। केरल में अपार दारिद्र्य है, जमीन कम है, इसलिए केरल का प्रश्न कठिन है। जनता में पक्ष-भेद होते हैं, तो और भी कठिन हो जाता है। अपनी आइडिओलाजी (आदर्श) को अपने मन में रखो, पर लोकहित का काम करने के समय एक हो जाओ। ऐसी प्रैक्टिकल बात सोचो कि सबके भले के लिए क्या करना होगा।

(नेदुमानगड, त्रिवेंद्रम, २२-४)

---

www.vinoba.in

केरल की सर्वोदय-यात्रा से–

तमिलनाड़ और केरल की सीमा-भूमि पर

(महादेवी)

गुजरात की बहन मीरा व्यास डेढ़ साल से हमारी पदयात्रा में थी। काफी पढ़ी हुई है। अन्य बहनों के साथ वह भी रिपोर्टिंग आदि में सहयोग करती थी। उन लोगों के जाने के बाद मीरा अकेली सब संभाल लेती थी। अब पू० बाबा ने उसको भी गुजरात में काम करने के लिए भेजा है। उसके पिता श्री रमणभाई १५-२० दिन यात्रा में रहे। बहुत मिलनसार हैं। प्रसन्न रहते हैं। सरकारी ऑफीसर थे। अभी पेन्शनर हैं। बाबा ने उन्हें कहा, "सरकार को आपने ३० साल दिये, आगे के ३० साल मुझे दे दो।" उन्होंने भक्तिपूर्वक यह प्रसाद स्वीकार कर लिया।

वळ्ळीमूर में मातृमंडल का उद्घाटन करते हुए बाबा ने दीपक जलाये और कहा, जैसे बिना हवा के दीपक स्थिर जलता है, वैसा ही चित्त भी स्थिर होना चाहिए। विशेषतः बहनों का चित्त स्थिर होना ही चाहिए, क्योंकि दुनिया में आज जोरों से हवा चल रही है। बहनों को उससे बचना चाहिए और दूसरों को भी बचाने की जिम्मेवारी बहनों की है। आज भाइयों ने दुनिया में हिंसा रूपी हवा चलायी है। उन्होंने एटम् बम, हाइड्रोजन् बम आदि हिंसात्मक शस्त्र बनाये हैं। इस जोरदार हवा से बहनों को बचना चाहिए। इसके लिए साधारण दीपक नहीं, बल्कि 'मणिज्योति' (रत्नदीप) अंतरज्योति अपने चित्त में बहनों को रखनी चाहिए। हमें आशा है कि यह जिम्मेवारी बहनें महसूस करेंगी।

तमिलनाड़ से बिदा !

बाबा के ११ महीने के दीर्घ संचार से तमिळ बंधु-भगिनियों में जो प्रेम और भक्ति का संचार हुआ था, उसके कारण बाबा को बिदाई देना उनके लिए बहुत भारी महसूस होता था। ता० १६ अप्रैल से यात्रा में सुहृदजनों का प्रवाह बढ़ता रहा। दो दिन से मंत्री-गण, नेता, भूदान के मुख्य कार्यकर्ता यात्रा में शामिल थे। ता० १७ को बिदाई की मीटिंग हुई। श्री जगन्नाथन्‌जी (तमिलनाड़ के भूदान-संयोजक) कुछ बोलने लगे। उनका हृदय भर आता था :

"तमिलनाड़ की यात्रा में विनोबाजी की उपस्थिति में जो कुछ दान मिला, वह तो प्रत्यक्ष है, पर अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने बड़ी देन हमें दी है–खासकर एक नयी जागृति, चेतना और आपसी प्रेम वगैरह का बीज बोया है। सभी संस्थाओं को मिलजुल कर काम करने के लिए नैतिक शक्ति से ही काम करने की वृत्तिवाला एक सर्वोदय-मंडल कायम किया है। हम सबको एक होकर सामूहिक रूप से आगे बढ़ने की अचूक प्रेरणा इससे मिलेगी।

"समुद्र के पानी में सूर्यनारायण के सामने कन्याकुमारी में बाबा का जो संकल्प हुआ, वह मानो भारत के चालीस करोड़ लोगों का ही संकल्प है, ऐसा मानना चाहिए। तालुका-दान का संकल्प एक दफा लेकर हम कैसे चुप बैठे रहें ? उसको पूरा किये बिना हम किस मुँह से बाबा के सामने जा सकते हैं ? अनुकूल वातावरण का ठीक उपयोग हमें समय पर कर लेना चाहिए, नहीं तो हमारी शारीरिक मृत्यु न भी हो, तो भी नैतिक मरण हो जायगा। बाबा के आशीर्वाद हमें मिले।"

आनंद-प्राप्ति नहीं, आनंद-शुद्धि !

विनोबाजी ने कहा, "इस वक्त विशेष कहने का मन नहीं है। शाम की प्रार्थना-सभा में तो बोलना ही है। अभी मैं भजन सुन रहा था। आपने भी वह सुना :

'वाय एल्लाम तित्तिक्कुम्
मनमेल्लाम् तित्तिक्कुम्।'

"–जिसको निष्काम सेवा की लगन लगी, उसको अत्यन्त शुद्ध आनन्द का अनुभव आता है।

"बहुत लोगों का गलत खयाल हुआ है कि मनुष्य को जीवन में आनन्द हासिल करना है। लेकिन आनंद-प्राप्ति मनुष्य-जीवन का उद्देश्य नहीं हो सकता, क्योंकि आनंद आत्मा का स्वरूप है। आत्मा केवल मनुष्य में नहीं, सब प्राणियों में है। इसलिए सब प्राणियों को आनंद-प्राप्ति है ही। सामान्य जीव-जन्तु, जिन्हें हम ज्यादा महत्त्व के नहीं मानते, वहाँ भी आनंद भरा पड़ा है। बिना आनंद के कोई रह नहीं सकता और जी नहीं सकता। मनुष्य का जीवन-लक्ष्य तो आनंद-शुद्धि है, आनंद-प्राप्ति नहीं।

"एक मनुष्य को शराब पीने में आनन्द मालूम होता है, तो एक को मिठाई खाने में ! एक को दूसरों को खिलाने में आनन्द होता है और किसीको उपवास करने में ! इस तरह आनंद की शुद्धि उत्तरोत्तर हो सकती है। जिसका आनन्द शुद्ध होगा, उसका जीवन उन्नत होगा। मैं जब शराबी को शराब में मस्त हुआ देखता हूँ, तो मैं समझता हूँ कि वह मेरा सहोदर है। वह मेरी ही रूप है ! जो आनन्द शराब में उसे आता है, वही आनन्द मुझे वेदों में आता है। आनन्द के नाते उन दोनों आनन्द में कोई फर्क नहीं है। लेकिन दोनों में फर्क यह है कि दूसरा अत्यन्त शुद्ध है। इस तरह उत्तरोत्तर आनंद की परिशुद्धि करनी है। उसका आनंद शुद्ध होता है, जिसने निष्काम सेवा में परिशुद्ध आनन्द का अनुभव किया हो।

"समाज में वैसे सेवा तो बहुत की जाती है। शायद ही ऐसा कोई हो कि जिसने समाज से सेवा पायी न हो और समाज की सेवा न की हो !...पर सेवा में अपेक्षा होती है। कीर्ति की लालसा होती है। इस तरह कुछ-न-कुछ वासना होती ही है। अपेक्षा के साथ की हुई सेवा में जो आनन्द है, वह इतना शुद्ध नहीं, जितना कि निष्काम सेवा में है।

"निष्काम सेवा कौन करता है ? जिसको सेवा में खुद अपना ही दर्शन होता है, वह निष्काम सेवा करता है। इस तरह दूसरों की सेवा याने हम अपनी ही सेवा करते हैं, ऐसा अनुभव आना चाहिए, तो वह निष्काम सेवा होगी। कोई किसीकी सेवा करता है, तो उसमें हम हमारी ही सेवा करते हैं, यह भास होना चाहिए। इसीको आत्म-दर्शन कहते हैं। इसीको ईश्वर-दर्शन कहते हैं। इसीलिए वर्णन करते हुए कवि ने कहा है :

'वाय एल्लाम् तित्तिक्कुम् मनमेल्लाम तित्तिक्कुम्।'

"हमको आशा है कि हमारे सहोदर, हमारे साथी–जिन्होंने हमारे साथ काम किया है, ऐसे आनंद का अनुभव करेंगे। जिसने अपनी सेवा के मूल्य की इच्छा की, उसने अपनी सेवा का मूल्य ही कम कर दिया ! सेवा का मूल्य करने की जो इच्छा करते हैं, वे अपनी सेवा के मूल्य को ही काटते हैं। जहाँ यह इच्छा नहीं होती, वहाँ सेवा अमूल्य होगी।

कार्य-सातत्य

"मैं बार-बार कहता आया हूँ कि कार्य सतत करना चाहिए। लोगों को आश्चर्य लगता है कि बाबा एक ही कार्य में सतत लगा रहता है, पर इसमें किसीको कोई आश्चर्य नहीं लगता कि बाबा दिन में तीन दफा खाता है ! कितने वर्ष हो गये, खाता ही है। अगर उसमें आश्चर्य नहीं, तो किसी सेवा-कार्य में सतत लगा है, इसका भी आश्चर्य नहीं लगना चाहिए, क्योंकि वह सेवा करता है, इसलिए परि-शुद्ध आनंद की अनुभूति उसे होती है। अतः उसको यह भी कहने की जरूरत नहीं कि तुम सतत सेवा-कार्य करते रहो। हमको आशा है कि काम को हमारी संगति में जितना जोर आया, उससे अधिक जोर हमारे वियोग में आयेगा।"

तमिलनाड़ का आखिरी पड़ाव १७ अप्रैल का है। तमिलनाड़ में ११ महीने कैसे गये, पता ही नहीं चला। यात्रा के प्रारंभ में पूर्ण कुंभ से बाबा का स्वागत हुआ था। उसके बाद अब तक लोगों के प्रेमपूर्वक हृदय-कुंभ का स्पर्श होता रहा। स्वच्छता, सुव्यवस्थितता, स्वाभाविक सादगी और अतिथि-सत्कार इन लोगों की संस्कृति में ही है। घर और सारे गाँव के मार्ग लीप-पोत कर रखे जाते हैं और उन पर रंगोलियों से, अल्पनाओं द्वारा स्वाभाविक चित्रकला-कौशल्य का ही दर्शन होता था। इस अवधि में कितनी महान् घटनाएँ हुईं !

कांचीपुरम-सम्मेलन के समय दुनिया के लोगों को संदेश मिला था। उसके बाद तीन दिन बाबा की उपोषण-तपश्चर्या चली। उस उपवास से जनहित की अनेक शुभ प्रेरणाएँ फैलीं। बाबा की तपश्चर्या प्रखर होती चली। तंत्रमुक्ति, निधि-मुक्ति का प्रकटन हुआ। तमिलनाड़ की सुशिक्षित जनता में भी ग्रामदान, ग्राम-संकल्प और तालुका-दान की प्रेरणा हुई, २२० ग्रामदान मिले। तालुका-दान के लिए सफल पुरुषार्थ चल रहा है। मानसून हवा चलती है, तो सारे देश को स्पर्श करती है। नींद में रहने वालों को भी जाग्रत करती है। सब दुनिया चकित हो रही है कि एक संत के तपोबल से यह सब हो रहा है। इस रूप में हाइड्रोजन और एटम बम को भी मात करने वाली कोई शिवशक्ति ही जनशक्ति के रूप में प्रकट हो रही है !

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की व्यवस्था

तमिलनाड़ के सेवकों और प्रेमी जनों ने किसी प्रकार की सेवा में त्रुटि नहीं होने दी। समय की पाबंदी रहती थी। बाबा के लिए दूध समय पर और स्वच्छ पात्र में मिलता था। दूध के लिए ७॥ बजे के बाद कभी इंतज़ार नहीं करना पड़ा। शाम को सबका भोजन भी ७॥ बजे तक हो जाता था। रात को ८ बजे दिन की अंतिम प्रार्थना होती रही। ९ बजे तक सब सहयात्री सो जाते थे। ११ महीने तक सतत एक स्थायी नेताजी (पायलट) साथ रहे। वे किसी-न-किसी तरह अगले पड़ाव के मील नाप कर आते थे। बाबा जहाँ से निकल कर जहाँ पहुँचते हैं, उस फासले को नाप लिये बगैर उनको चैन नहीं मिलती थी। बाबा को उन नेताजी नटराजन् पर विश्वास बैठ गया है। सहयात्रियों की भोजन-व्यवस्था बालाजी करते थे। सब सहयात्रियों को बिना मिर्च का स्वादिष्ट भोजन वे माँ की तरह प्रेम से खिलाते थे। सतत चूल्हे-चौके में तपते रहते थे। बालाजी सारा देश घूमे हुए हैं। अपना घर-बार आदि सब त्याग कर केवल सेवा-भाव से रहते थे। तमिलनाड़ के नाश्ते-भोजन आदि में अनेक विविधताएँ रहतीं और वह सस्वादु होता था। उत्तर भारत के जो मेहमान आते रहे, वे भी इसकी प्रशंसा करते रहे।

श्री सुब्रह्मण्यमूजी बाबा के भाषण का तमिल में अनुवाद करते थे। दिन भर और पेट भर अनुवाद करके बाबा को खुश करते थे। अपने विनोद से सबकी थकान दूर करते थे। बाबा के सामान की गाड़ी कहीं फँस जाती, तो वे कहीं से भी दौड़ कर आते थे और ड्राइवर का काम भी निभा लेते!

श्री कृष्णम्मा ने इस भूदान-यज्ञ में श्री जगन्नाथन् को पूरा-पूरा सहयोग देकर अपने सहधर्मचारिणी का व्रत निभाया। १८ अप्रैल की सुबह कृष्णम्मा ने बाबा से आशीर्वाद लेकर बिदाई ली। उसका हृदय भर आया और जोर से रोने लगी। पू. बाबा ने उसको आशीर्वाद और आश्वासन दिया।

श्री जगन्नाथन्जी तो तमिलनाड़ के भूदान-कार्य के बीज हैं। कितने लोगों के नाम लें? सहस्रनामावली हो जायगी! भाषा नहीं आती थी, लेकिन हृदय और कृति बोलती थी। यात्रा में सब मुख्य कामों को उन्होंने अच्छी तरह निभाया। विनोबाजी को केरल के नवीन राज्य में पहुँचा कर भरे हृदय से वे वापिस लौटे। लेकिन मानसिक संगति ही सच्ची संगति है।

केरल की गोद में

ता० १८ अप्रैल को विनोबाजी ने केरल में प्रवेश किया। रास्ते में गाँव की सीमा ही नहीं दीखती थी। गृहमालिका के जैसे दोनों बाजू घर ही घर दीख रहे थे। घर और आगे-पीछे वाटिका। बाबा खंड और छोटे टुकड़ों को मानते नहीं। यहाँ पर वही अखंड दर्शन होता है। केरल की रचना ही ऐसी है। दोनों बगल में रास्ते भर नारियल के पेड़ खड़े थे, मानो शांति-सेना हाथों में मंगल फल लेकर के संत पुरुष का स्वागत कर रही है। नया राज्य, नयी भाषा और नवीन सृष्टि-सौंदर्य! लेकिन हृदय में वही प्रेम, उसमें कोई फर्क नहीं है।

केरल की सीमा पर हरे-भरे जंगली पत्तों से, नारियल के पत्तों से सुन्दर, सादी कमान बनायी थी। कन्याएँ हाथ में दीपक लेकर पंक्तियों में खड़ी थीं। रास्ते पर किसी प्रकार की अव्यवस्था न थी। अपार जनता अमावस्या के समुद्र के जैसी शांत-मुग्ध थी। गवर्नर, मुख्य मंत्री तथा भिन्न-भिन्न राजकीय पक्षों के नेता स्वागत के लिए आये थे। वह एक शुभारंभ था।

इसी दिन ६ साल पहले तेलंगाना में भूदान-यज्ञ का श्रीगणेश हुआ था। उसके बाद बाबा की यह यात्रा गंगा के प्रवाह के सदृश अखंड चल रही है। 'भूमिदान' ग्रामदान, फिरका-दान और अब तालुका-दान तक पहुँच गया है। अब वह तीसरा चरण विराट रूप धारण कर मालकियत रूपी बलि राजा के सिर पर प्रविष्ट हो रहा है। तीसरा पाद याने "शिवो भूत्वा शिवं यजेत्" सब शिव ही शिव हो जाय, इसलिए बाबा केरल में पूरा स्टेट् ही माँग रहे हैं। कम्युनिज्म का मूल उद्देश्य भी वही है। अगर वह कृति-रूप धारण करे, तो सारी दुनिया के और भारत के कम्युनिज्म में कितना अंतर है, यह समझने में देर नहीं लगेगी। भारत की संस्कृति में सत्य, अहिंसा और प्रेम भरा है बाहर की कलुषित हवा परिस्थितिवशात् उसको कितना ही बिगाड़ने की चेष्टा करे, फिर भी वह अपना शुद्ध रंग छोड़ नहीं सकता और वह छूटेगा भी नहीं। केरल की जनता को देखते ही भारत की मूल संस्कृति की याद आती है। कितनी सादगी और स्वाभाविकता है!

—

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

(लोकसेवकों से प्राप्त विवरण का सार)

राजस्थान : (१) श्री पूर्णचन्द्र जैन, जयपुर (जनवरी-फरवरी) अ० भा० भूदान-पदयात्रा-टोली की पूर्वतैयारी की गयी। विद्यार्थियों में विचार-प्रचार किया गया। ग्रामदानी ग्राम के गाँवों के संबंध में विचार किया।

(२) श्री भगवानदास माहेश्वरी, जैसलमेर (जनवरी से मार्च अंत तक) 'देदावतों का बेरा' और 'बीडे का गाँव' ग्रामदान में मिले। पदयात्राएँ हुईं। मजदूर-संघ के लोगों में सम्पत्तिदान-प्रचार किया। ग्रामोद्योग का परिचय दिया।

पंजाब : (१) श्री जयनारायणजी, रोहतक-भूदान व वितरण-प्रचार किया।

(२) श्री निरंजनसिंहजी, करनाल (फरवरी व मार्च) वितरण का प्रयास। अ० भा० भूदान-पदयात्रा टोली का ८ स्थानों पर कार्यक्रम हुआ। सभी दलों के व्यक्तियों, विद्यार्थियों व जनता का सहयोग रहा।

(३) श्री यशपाल मित्तल, गुरुदासपुर (१ जनवरी से ३१ मार्च तक) पंजाब के भूदान सतत पदयात्रा द्वारा भूदान तथा वितरण और प्रचार आदि कार्य में प्रगति हुई। जनवरी में वर्षा व गर्मी के बावजूद भी जनता में सहयोग व उमंग की भावना देखी गयी। डा० गोपीचन्द भार्गव तथा श्री बनारसीदासजी गोयल का सहयोग प्राप्त हुआ। जिला भटिंडा और अमृतसर भू-क्रांति के योग्य क्षेत्र प्रतीत हुए। ३७५ मील की यात्रा द्वारा ३० गाँवों में प्रचार किया। ९५ भाइयों ने समयदान दिया। भू-प्राप्ति, भू-वितरण हुआ और साहित्य-बिक्री हुई।

(४) श्री रामप्रताप भारद्वाज, अम्बाला (फरवरी का दूसरा पक्ष) अ० भा० भूदान-टोली का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। प्रांत के सभी वर्ग के नेता, प्रतिष्ठित नागरिक, कालेज के विद्यार्थी, प्रोफेसर आदि सम्मिलित हुए।

(५) श्री रोशनलाल सोनी, काँगड़ा (१ जनवरी से १० फरवरी तक) निधि-मुक्ति के पूर्व वैतनिक कार्यकर्ताओं द्वारा ठीक से कार्य चलता रहा। लेकिन निधि-मुक्ति के उपरांत कठिनाई होने लगी, क्योंकि जिला कांगड़ा बहुत फैला हुआ है। पहाड़ियाँ और बंजर भूमि है, साधन के अभाव में तथा आबादी दूर-दूर होने से सम्पत्तिदान तथा साधन-दान के हेतु जनता से सम्पर्क स्थापित न हो सका। यहाँ अभी तक १७०० एकड़ जमीन भूदान में प्राप्त हुई है।

(६) श्री खुशीरामजी, गुड़गाँव, रेवाडी (१ जनवरी से ३१ मार्च तक) रचनात्मक संस्थाओं से कार्यकर्ताओं की माँग, ग्रामोद्योग-समितियों का निर्माण और सामूहिक पदयात्राएँ हुईं। गाँवों में विचार-प्रचार किया गया।

(७) श्री गणेशीलालजी, हिसार (१ जनवरी से ३१ मार्च) पदयात्राओं द्वारा गाँवों में प्रचार, भू-प्राप्ति तथा वितरण, सम्पत्तिदान, साहित्य-बिक्री, पत्रों के ग्राहक बनाना आदि कार्य किये गये। अ. भा. भूदान-टोली द्वारा अच्छा प्रचार हुआ। भू-क्रान्ति-दिन की पूर्वतैयारी की।

बंबई-विदर्भ : (१) श्री नारायणराव जवरे, खामगाँव (१ जनवरी से ३१ मार्च तक) प्रचार-कार्य, जन-सम्पर्क, श्री जयप्रकाशजी के कार्यक्रमों में सहयोग दिया। पदयात्रा तथा साहित्य-बिक्री की।

खादीग्राम, मुँगेर —सहमंत्री, सर्व-सेवा-संघ

गुजरात में श्री रविशंकर महाराज की दो साल की पदयात्रा की फलश्रुति

श्री रविशंकर महाराज की गुजरात और सौराष्ट्र के १२०७ गाँवों की ४११७ मील की २ वर्ष की यात्रा १३ अप्रैल '५७ को समाप्त हुई। इस अवधि में उन्हें कुल २०९०६ बीघा जमीन मिली, उसमें से ४७९७ बीघा ९२२ परिवारों में वितरित की। ४३२७०७) का साधनदान मिला। १००० के करीब संपत्तिदान मिला। ६५८ दाताओं द्वारा ५ वर्ष के लिए १४५८ मन का अन्नदान मिला। इसके साथ ६८ गायें, २९ बैल, ४ भैंसें, ८ बकरियाँ, १७२ हल, ९८ खेती के छोटे औजार, ३० मोटें, १४२ श्रमदान, २४ समय-दान, २ जीवन-दान, ३ ग्रामदान, ४५३ सूत-गुंडियाँ, १०५० गज कपड़ा, १५ चरखे, ८ मकान, २ मकान के प्लॉट, २ रहँट, ८ पेड़, १५ सोना-चांदी के गहने, १००० ईंटों आदि का भी दान प्राप्त हुआ।

—

बंगाल

* बाकुड़ा जिले के गंगाजल घाटी थाने की पदयात्रा में गोविंदपुर गाँव ग्रामदान में मिला। इस गाँव के १८ परिवारों में १०८ व्यक्ति रहते हैं। कुल १७५ बीघा भूमि है। ग्रामदान के अलावा १६ एकड़ भूमि और मिली। बंगाल की पदयात्रा के समय विनोबाजी इस गाँव में आये थे।

www.vinoba.in

* भूक्रांति-दिवस के अवसर पर पुरुलिया जिले के बान्दोयान थाने में "झोरबइद" गाँव ग्रामदान में मिला। गाँव की जनसंख्या ४८० और जमीन ६३१ एकड़ है। सभी परिवार संथाली हैं। १५ कार्यकर्ताओं ने ५७ गाँवों की यात्रा में ३५० एकड़ भूमि वितरित की।

बिहार

* समस्तीपुर सबडिविजन में रोसडा थाने के अंतर्गत भरडिया ग्राम-निवासियों ने भूदान-कार्यकर्ताओं को बुला कर अपनी सारी जमीन का स्वामित्व-विसर्जन किया। वहाँ ८० से ज्यादा परिवार हैं। तीन-चार व्यक्ति गाँव के बाहर होने से दानपत्र नहीं भर सके। गाँव में ५०० की आबादी तथा ५० बीघा जमीन है।

* १५ अप्रैल को बोधगया क्षेत्र के ग्राम गुरियावाँ में आसपास के ५० गाँवों से आये लोगों का सम्मेलन हुआ। ४२ परिवारों में किये ८८ एकड़ भूवितरण की नामावली जाहिर की। गांधी-पुस्तकालय का उद्घाटन हुआ। रात को छात्रों ने 'पहली रोटी' नाटक द्वारा भूक्रांति का संदेश ग्रामीण भाई-बहनों को दिया। बोधगया थाने में ८० परिवारों में १८२ एकड़ भूमि का वितरण हुआ।

* भूक्रांति-दिवस पर शाहाबाद जिले के सासाराम थाने में २५०० एकड़ भूमि वितरित की गयी।

* रानीपतरा-सर्वोदय-आश्रम की ओर से पूर्णियाँ जिले में करीब ११७५ एकड़ भूमि बँट चुकी है।

उत्तर प्रदेश

* इलाहाबाद जिले की करछना और मेजा तहसील में १७० दाताओं से २०५ बीघा भूदान मिला और ११२ दाताओं ने ६००) के वार्षिक संपत्तिदान का वचन दिया। जिले के ८५१ गाँवों में भूक्रांति-दिवस मनाया गया। कुल ६७० बीघा भूदान प्राप्त हुआ। ३७७३ विद्यार्थियों ने गर्मी की छुट्टियों में काम करने के लिए नाम दिये हैं। उनसे लगभग ३००) का मासिक संपत्तिदान भी मिला।

* मसुरी में २९ अप्रैल को हुए विकास-आयुक्तों के छठे सम्मेलन ने उपसमिति की इस सिफारिश को सिद्धान्त रूप से माना: "...भूदान तथा ग्रामदान के लिए वातावरण तैयार किया जाना चाहिए और लोगों को नैतिक दृष्टि से इस ओर झुकाने की चेष्टा होनी चाहिए। इससे सामुदायिक विकास-योजनाओं के संचालन में भी सहूलियत होगी।"

संवाद-सूचनाएँ :

छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन सर्वोदय-शिविर

मेरे जैसे साधारण देशसेवक के आह्वान पर छात्रों ने अपना एक वर्ष का या कम-ज्यादा समय भारत माता की सेवा के लिए उत्सर्ग किया है। इस अपूर्व त्याग और बलिदान के लिए भारत माता गौरवान्वित होगी। इस त्याग और बलिदान से आप कुछ भी खोयंगे नहीं, पायेंगे ही। —जयप्रकाश नारायण

श्री जयप्रकाशजी की अपील पर बिहार के विभिन्न कॉलेजों के सैकड़ों छात्रों ने भू-क्रांति के लिए वर्ष-दान तथा हजारों छात्रों ने गर्मी की छुट्टियों में एक महीने का समय-दान देने का संकल्प किया है। अतएव ऐसे छात्रों के लिए प्रांत के विभिन्न भागों में २५ मई से २७ जून तक शिविर होंगे। जिन छात्रों ने समय-दान दिया है या जो अब भी देना चाहते हों, वे सुविधानुसार निम्न किसी भी शिविर में शामिल हो सकते हैं। इन शिविरों में श्री जयप्रकाशजी, श्री धीरेन्द्रभाई मजूमदार तथा अन्य विचारकों का मार्गदर्शन मिलेगा। द० बिहार के शिविरों में भाग लेने वाले छात्रों को अपने आने की पूर्वसूचना श्री श्यामप्रकाशजी, नेशनल हाउ, कदम कुआँ, पटना-३ के पते से देनी चाहिए। उत्तर बिहार के छात्र अपने आने की सूचना श्री श्यामबहादुरजी, द्वारा—श्री माणिक प्र० सिंह, सर्वोदयग्राम, मुजफ्फरपुर को दें।

पहला शिविर २५ मई से २८ मई तक खादीग्राम (मुँगेर) में होगा। दूसरा शिविर ५ जून से ८ जून तक सर्वोदय-आश्रम, सोखोदेवरा (गया) में होगा। तीसरा शिविर सोखोदेवरा में ही ९ जून से १२ जून तक केवल अध्यापकों, वकीलों, डाक्टरों तथा पत्रकारों के लिए होगा। चौथा शिविर जमशेदपुर में १४ जून से १७ जून तक होगा। इसके अलावा १५ जून से १८ जून तक दरभंगा में, १९ जून से २२ जून तक मुजफ्फरपुर में और २३ जून से २७ जून तक सर्वोदय-आश्रम, रानीपतरा, जि० पूर्णियाँ में शिविर में होंगे।

---

१७ मई का अंक बंद रहेगा

सर्वोदय-सम्मेलन के कारण "भूदान-यज्ञ" का आगामी अंक बंद रहेगा। —सं०

तमिलनाड़-क्रांतियात्रा की फलश्रुति : आँकड़ों में

विनोबाजी ने तमिलनाड़ में ता० १३ मई '५६ से १७ अप्रैल '५७ तक पदयात्रा की। फलस्वरूप निम्न प्रकार दान मिले। तमिलनाड़ में विनोबाजी का प्रवेश होने के पहले ५० हजार एकड़ भूमि-दान और १० हजार रु० संपत्तिदान मिला था। पदयात्रा : कुल २६९३ मील, पड़ाव ४०९ हुए।

भूदान-प्राप्ति	१,२०,२१५ एकड़
भूदाता	२४,८८६
संपत्तिदान-प्राप्ति	४,१७,०७८ रु०
संपत्तिदाता	२९,२८०
साहित्य-बिक्री	५४, ६३९ रु०
ग्रामदान	२१९

प्रकाशन-समाचार

सर्वोदय-दर्शन दादा धर्माधिकारी पृष्ठ ४६४, सजिल्द मूल्य ३)

आचार्य दादा धर्माधिकारी सर्वोदय-शास्त्र के विद्वान् व्याख्याता हैं। उनकी विनोदभरी 'हितं मनोहारि' शैली सभी को मंत्रमुग्ध कर लेती है। हरिजन-आश्रम अहमदाबाद के विचार-शिविर, श्रममारती-खादीग्राम और काशी में किये गये प्रवचनों के उत्तम संकलन—'सर्वोदय-दर्शन'—की पंक्ति-पंक्ति में इसकी झाँकी मिलती है। सर्वोदय का कोई भी मुद्दा इसमें छूटा नहीं। सर्वोदय की इस ज्ञान-गंगा में जो अवगाहन करेगा, वह कृतकृत्य हुए बिना न रहेगा। सर्वोदय की ऐसी सरल, हृदयस्पर्शी और मनमुग्धकारी व्याख्या अभी तक उपलब्ध न थी।

नक्षत्रों की छाया में (द्वितीय संस्करण) श्रीकृष्णदत्त भट्ट पृष्ठ ३४४, मूल्य १॥)

तीन मास के भीतर समाप्त प्रथम संस्करण पर आयी हुई आलोचनाएँ :

—भूदान-यज्ञ के अध्वर्यु सन्त विनोबा भावे के अनुगमन में उड़ीसा, हैदराबाद और आंध्र में बिताये ढाई मास की पदयात्रा के दैनन्दिन संस्मरण और संत-सान्निध्य का एक सफल पत्रकार के द्वारा सुसम्पादित रेखाचित्र भूदान-साहित्य वाङ्मय में प्रथम आलंकारिक अनुदान बना है। —'आर्यावर्त'

—पढ़ कर लगता है कि हम विनोबा के साथ ही यात्रा कर रहे हैं। —वासुदेवशरण अग्रवाल

—भट्टजी की कलम में जादू है। उनके परिष्कृत ज्ञान की अनमोल कुंजी इसमें है। —'नवशक्ति'

—विनोबा के विविध और अनेक स्वरूपों का शब्द-चित्रण इस पुस्तक में बड़ा रमणीय और ग्राह्य बन पड़ा है। लेखक की नजर इतनी पैनी और सतर्क रही है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल-से-स्थूल बात ही नहीं तुच्छ-से-तुच्छ और गंभीर-से-गंभीर स्थिति को भी ओट नहीं होने दिया है। शब्दों का तो मानो लेखक शिल्पी ही है। —'गांधी-पत्रिका'

—अ. भा. सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

विषय-सूची

१.	समाज और भूमि-व्यवस्था : २.	टॉल्स्टाय	२
२.	तंत्र-मुक्ति और निधि-मुक्ति के गर्भितार्थ	धीरेन्द्र मजूमदार	३
३.	क्रांति की राह पर	,,	५
४.	वोट की कीमत कब ?	विनोबा	६
५.	सहयोगी खेती और ग्रामदान	जवाहरलाल नेहरू	६
६.	हमारे अधिकार	बाबा राघवदास	६
७.	केरल के साहित्यिकों के बीच	विनोबा	७
८.	मानवता के उद्धार की पावन-स्थली	ब्रजलाल वर्मा	८
९.	एक चेतावनीपूर्ण घटना !	वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी	८
१०.	केरल की समस्याएँ	विनोबा	९
११.	तमिलनाड़ और केरल की सीमा पर	महादेवी	१०
१२.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण	—	११
१३.	संवाद-सूचनाएँ, प्रकाशन-समाचार आदि	—	१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी

www.vinoba.in